Official Periodical of Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi

श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी की अधिकृत पत्रिका

SHRI SAI LEELA

श्री साई लीला

* Year 26 * Issue 4 * July-August 2026 * ₹ 15/-

* वर्ष २६ * अंक ४ * जुलाई–अगस्त २०२६ * ₹ १५/–

|| ॐ साई राम ||
श्रध्दा
सबुरी
|| ॐ साई राम ||

SHREE SAIBABA SANSTHAN TRUST, SHIRDI

Hon'ble Members of Ad-hoc Committee

Shri Goraksha Gadilkar (IAS)
(Chief Executive Officer)

Shri Pankaj Ashiya (IAS)
(Member)
District Collector, Ahilyanagar

Shri Shivaji Kachare
(Chairman)
Principal District & Sessions Judge, Ahilyanagar

Internet Edition - URL:http://www.shrisaibabasansthan.org

श्री साई लीला

SHRI SAI LEELA

वर्ष २६ अंक ४

Year 26 Issue 4

संपादक : मुख्य कार्यकारी अधिकारी
कार्यकारी संपादक : भगवान दातार

Editor : Chief Executive Officer
Executive Editor : Bhagwan Datar

अंतरंग

- Baba said "These feet are ancient...!" 4
- साईं शिक्षा की राह पर चलते... मौके पर साईं आते हैं दौड़े। : सुरेश चन्द्रा ६
- माघ कवि से साईं चरण तक... विश्वास का दिव्य दीपक : (स्व.) प्रो. डॉ. सुबोध अग्रवाल १६
- साईं... सुबोध... २१
- ... और शुरू हो गई साईं की विधिवत पूजा! २४
- *Guru Paurnima Utsav* - 2026 28

● Cover & inside pages designed by Don Bosco and Prakash Samant (Mumbai) ● **Computerised Typesetting:** Computer Section, Mumbai Office, Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi ● **Mumbai Office :** 'Sai Niketan', 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar (East), Mumbai - 400 014. Contact No. : (0)9404876574 E-mail : saidadar@sai.org.in ● **Shirdi Office :** At Post Shirdi - 423 109, Tal. Rahata, Dist. Ahilyanagar. Tel. : (02423)258500 Fax : (02423)258770 E-mail : 1. saibaba@shrisaibabasansthan.org 2. saibaba@sai.org.in ● **Annual Subscription : ₹ 125/-** ● **Subscription for Life : ₹ 2,500/-** ● **Annual Subscription for Foreign Subscribers : ₹ 1,000/-** (All the Subscriptions are Inclusive of Postage) ● **General Issue : ₹ 15/-** ● **Shree Sai *Punyatithi* Annual Special Issue : ₹ 25/-** ● Published and printed by the Chief Executive Officer, on behalf of Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi at Sai Niketan, 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai - 400 014 and at the Taco Visions Pvt. Ltd., Gala Nos. 9 & 10, Blue Mount Work Station, Valiv Phata, Sativli Rd., Vasai East, Palghar - 401 208 respectively. The Editor does not accept responsibility for the views expressed in the articles published. All objections, disputes, differences, claims and proceedings are subject to Mumbai jurisdiction.

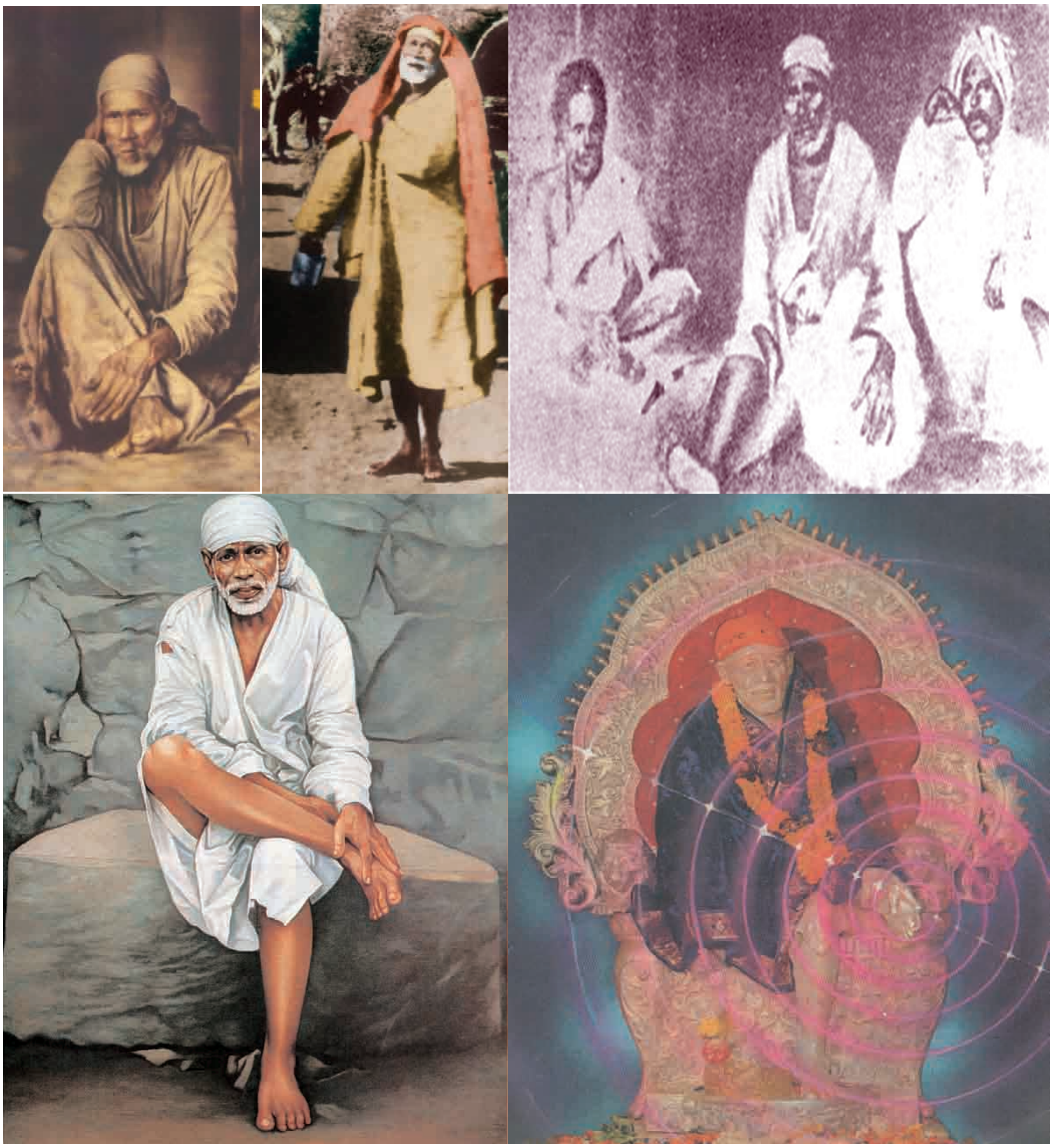

बाबा म्हणती ''हे पाय पुरातन फार। जाहली तुझी काळजी दूर।
पूर्ण भरंवसा ठेव मजवर। कृतार्थ लवकर होशील।।''

Baba said "These feet are ancient. Your worries are over now. Have full faith in me. You will be fulfilled soon."

बाबा ने कहा कि ''ये चरण अधिक पुरातन तथा पवित्र हैं। अब तू चिंता से मुक्त हो गया है। भरोसा पूरा तू रख मुझ पर। जल्द ही होगा कृतार्थ तू।।''

... श्री साईं बाबा का ध्यान कैसे किया जाए... उस सर्वशक्तिमान् की प्रकृति अगाध है, जिसका वर्णन करने में वेद और सहस्त्रमुखी शेषनाग भी अपने को असमर्थ पाते हैं। भक्तों की रुचि स्वरूप-वर्णन से नहीं, उनकी तो दृढ़ धारणा है कि आनंद की प्राप्ति केवल उनके श्री-चरणों से ही संभव है। उनके चरण-कमलों के ध्यान के अतिरिक्त उन्हें अपने जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति का अन्य मार्ग विदित ही नहीं। हेमाडपंत भक्ति और ध्यान का जो एक अति सरल मार्ग सुझाते हैं, वह है :-

कृष्ण पक्ष के आरंभ होने पर चंद्र-कलाएँ दिन - प्रति दिन घटती जाती हैं तथा उनका प्रकाश भी क्रमशः क्षीण होता जाता है और अंत में अमावस्या के दिन चंद्रमा के पूर्ण विलीन रहने पर चारों ओर निशा का भयंकर अँधेरा छा जाता है; परंतु जब शुक्ल पक्ष का प्रारंभ होता है, तो लोग चंद्र-दर्शन के लिए अति उत्सुक हो जाते हैं। इसके बाद द्वितीया को जब चंद्र अधिक स्पष्ट नहीं होता, तब लोगों को वृक्ष की दो शाखाओं के बीच से चंद्र-दर्शन के लिए कहा जाता है; और जब इन शाखाओं के बीच उत्सुकता और ध्यानपूर्वक देखने का प्रयत्न किया जाता है, तो दूर क्षितिज पर छोटी सी चंद्र-रेखा के दृष्टिगोचर होते ही मन अति प्रफुल्लित हो जाता है, इसी सिद्धांत का अनुमोदन करते हुए हमें बाबा के श्री-दर्शन का भी प्रयत्न करना चाहिए।...

... बाबा के चित्र की ओर देखो... अहा, कितना सुंदर है! वे पैर मोड़ कर बैठे हैं और दाहिना पैर बाएं घुटने पर रखा गया है। बाएं हाथ की अँगुलियाँ दाहिने चरण पर फैली हुई हैं। दाहिने पैर के अँगुठे पर तर्जनी और मध्यमा अँगुलियाँ फैली हुई हैं। इस आकृति से बाबा समझा रहे हैं कि यदि तुम्हें मेरे आध्यात्मिक दर्शन करने की इच्छा हो, तो अभिमानशून्य और विनम्र होकर उक्त दो अँगुलियों के बीच मेरे चरण के अँगूठे का ध्यान करो! तब कहीं तुम उस सत्य स्वरूप का दर्शन करने में सफल हो सकोगे। भक्ति प्राप्त करने का यह सबसे सुगम पथ है।

- श्री साईं सत् चरित -

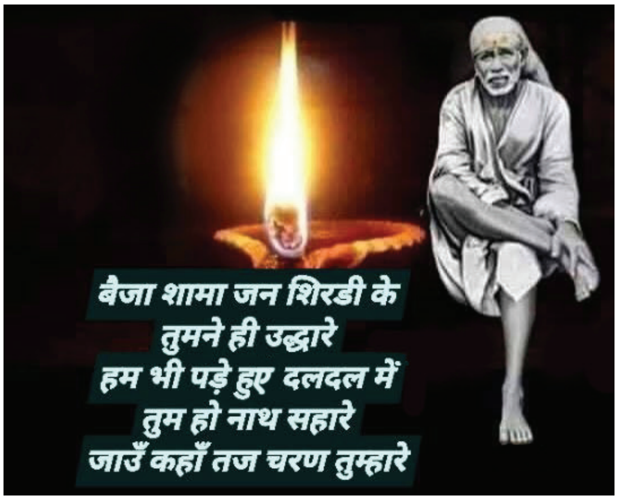

जाऊँ कहाँ तज चरण तुम्हारे,
दीन बंधु प्रभु साईं तुमको, दीन अकिंचन प्यारे...
रोग शोक दुख दारिद विपदा, व्याकुल भगत बिचारे।
आरत पुकार सुनके उनकी, तुमने कष्ट निवारे,
जाऊँ कहाँ तज चरण तुम्हारे...
बैजा शामा जन शिर्डी के, तुमने ही उद्धारे,
हम भी पड़े हुए दलदल में, तुम हो नाथ सहारे,
जाऊँ कहाँ तज चरण तुम्हारे...
अवगुण लाखों गुण नहिं एको, मद अज्ञान घनेरे,
दास कुम्भेश ऐसे पापी, तुमने नाथ सँवारे,
जाऊँ कहाँ तज चरण तुम्हारे...

जय साईंनाथ!

- दास कुम्भेश
बी-२०३, जूही, सेक्टर २, वसंत नगरी,
वसई (पूर्व) - ४०१ २०८, पालघर, महाराष्ट्र.
ई-मेल : **kumbhesh9@gmail.com**
संचार ध्वनि : (0)९८९०२८७८२२

बाबा ने स्वयं कभी उपवास नहीं किया, न ही उन्होंने दूसरों को करने दिया। उपवास करने वालों का मन कभी शांत नहीं रहता। इसलिए न तो हमें उपवास करना चाहिए और न ही अधिक भोजन। भोजन में संयम रखना शरीर और मन दोनों के लिए उत्तम है। - श्री साईं सत् चरित

साईं शिक्षा की राह पर चलते...
मौके पर साईं आते हैं दौड़े।

जब–जब संसार में दुःख, अन्याय, भय, अशांति और निराशा बढ़ती है, तब मानवता को सही दिशा दिखाने

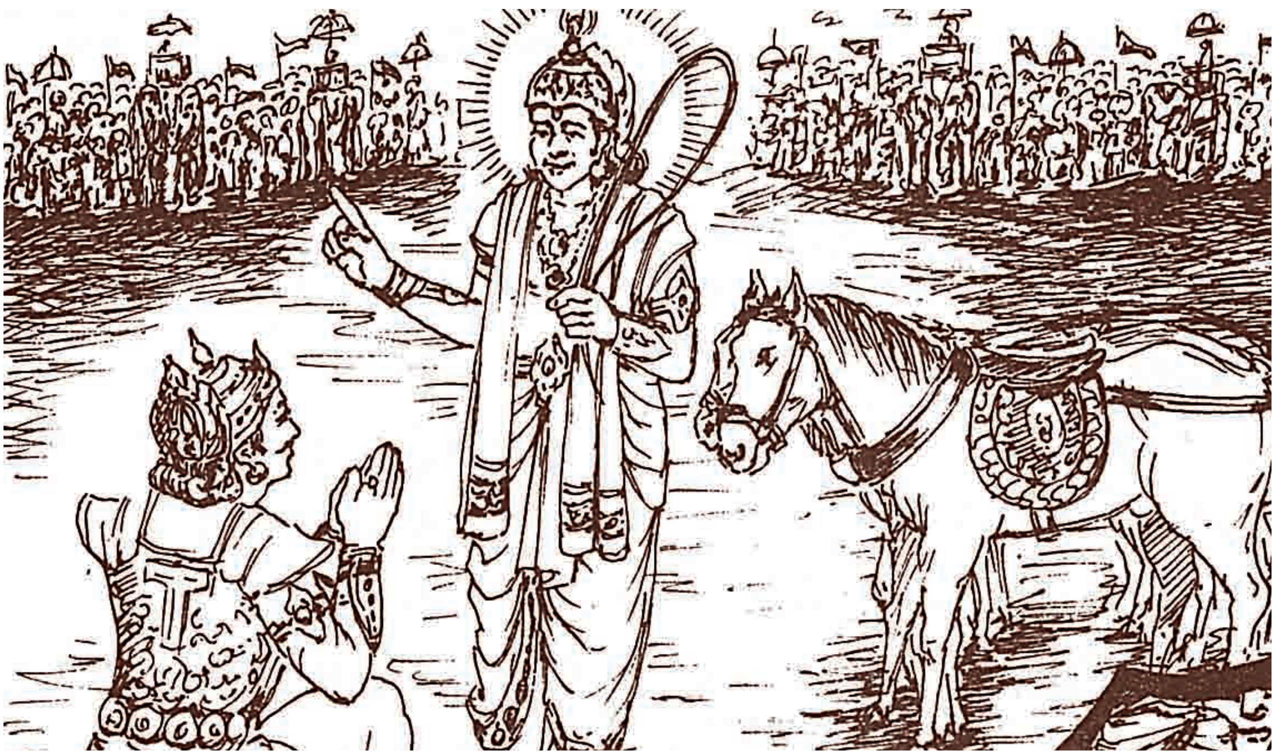

के लिए महान संत और महापुरुष अवतरित होते हैं। ऐसे ही महान संतों में शिर्डी के साईं बाबा का नाम अत्यंत श्रद्धा और सम्मान के साथ लिया जाता है। साईं बाबा ने अपने पूरे जीवन में मानवता, प्रेम, सेवा, समानता, श्रद्धा और सबूरी का संदेश दिया। उनका प्रसिद्ध वचन - ''सबका मालिक एक'' - केवल शब्द नहीं, बल्कि संपूर्ण मानव जाति के लिए जीवन का दिव्य मार्ग है।

साईं बाबा ने कभी जाति, धर्म, ऊँच-नीच अथवा अमीरी-ग़रीबी में भेदभाव नहीं किया। उनके लिए हर मनुष्य ईश्वर की संतान था। वे कहते थे कि मनुष्य को अपने कर्मों द्वारा दूसरों की भलाई करनी चाहिए। भूखे को भोजन, प्यासे को पानी, दुखी को सहारा और निराश व्यक्ति को आशा देना ही सच्ची पूजा है। बाबा का स्पष्ट संदेश था कि मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है।

साईं बाबा ने केवल उपदेश ही नहीं दिए, बल्कि स्वयं अपने जीवन में सादगी, त्याग और सेवा का जीवंत पालन किया। वे हमेशा ग़रीबों, लाचारों और पीड़ितों की सहायता के लिए तत्पर रहते थे। यही कारण है कि आज भी करोड़ों भक्त यह अनुभव करते हैं कि जब वे सच्चे मन से बाबा को याद करते हैं, तब बाबा किसी न किसी रूप में उनकी सहायता अवश्य करते हैं। इसीलिए भक्तों के बीच यह भावना अत्यंत प्रसिद्ध है - **साईं शिक्षा की राह पर चलते... मौके पर साईं आते हैं दौड़े।**

साईं बाबा ने सभी धर्मों का सम्मान किया। उनके पास सभी धर्मों के लोग आते थे और बाबा सबको समान प्रेम देते थे। वे कहते थे कि धर्म अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन सभी का उद्देश्य मानव का कल्याण और ईश्वर की प्राप्ति है। उन्होंने लोगों को आपसी प्रेम, भाईचारे और सद्भाव का संदेश दिया।

आज के समय में जब समाज में तनाव, स्वार्थ, घृणा और भेदभाव बढ़ रहा है, तब साईं बाबा की शिक्षाएँ और भी अधिक प्रासंगिक हो जाती हैं। यदि मनुष्य श्रद्धा और सबूरी के साथ साईं बाबा के बताए मार्ग पर चले, ग़रीबों की सहायता करे, सत्य और सेवा को अपनाए तथा सभी मनुष्यों को समान समझे, तो समाज में फैली अनेक बुराइयाँ स्वतः समाप्त हो सकती हैं।

साईं बाबा का संपूर्ण जीवन और उनके उपदेश हमें यह गूढ़ आध्यात्मिक सत्य सिखाते हैं कि ईश्वर केवल ईंट-पत्थरों से बने मंदिरों, मस्जिदों या अन्य धार्मिक स्थलों की सीमाओं में ही नहीं बँधा है, बल्कि वह सृष्टि के प्रत्येक छोटे-बड़े प्राणी और घट-घट में साक्षात् विद्यमान है। बाबा के दर्शन का मूल आधार ही यही था कि बाह्य आडंबरों और कठोर तपस्याओं से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हृदय की पवित्रता है। उनके अनुसार, जब कोई मनुष्य समाज के सबसे उपेक्षित, निर्धन और असहाय जीव के प्रति अपने भीतर संवेदना जागृत करता है और दूसरों के तीव्र दु:ख एवं पीड़ा को गहराई से अपना ही दु:ख समझने लगता है, वही वास्तव में ईश्वर का सच्चा भक्त और परम आराधक कहलाता है।

बाबा ने मानवता को यह स्पष्ट संदेश दिया कि निस्वार्थ प्रेम, असीम दया, अंतहीन करुणा और पीड़ित मानवता की अनवरत सेवा ही इस चराचर जगत् में जीवन की सबसे बड़ी साधना और ईश्वर प्राप्ति के सबसे सुगम माध्यम हैं। जब हम किसी भूखे को अन्न, रोगी को औषधि और निराश मन को सांत्वना रूपी संबल प्रदान करते हैं, तो वह सेवा सीधे परमात्मा तक पहुँचती है। इस प्रकार, जीवों पर दया करना और सर्वत्र ईश्वर के अंश को देखना ही मनुष्य को आंतरिक रूप से समृद्ध बनाता है तथा उसके भीतर फैले स्वार्थ और अहंकार के अंधकार को मिटा कर सदाचार का दिव्य प्रकाश उत्पन्न करता है।

शिक्षा केवल अक्षरों, पुस्तकों और डिग्रियों तक सीमित नहीं होती। सच्ची शिक्षा वह है, जो मनुष्य को जीवन जीने की सही दिशा दे, उसके भीतर मानवता, सेवा, करुणा, धैर्य, श्रद्धा, सबूरी और सदाचार का प्रकाश उत्पन्न करे। जिस शिक्षा से मनुष्य का मन निर्मल हो, विचार पवित्र हों और जीवन समाज तथा मानव कल्याण के लिए समर्पित हो जाए, वही वास्तविक शिक्षा कहलाती है। यही शिक्षा शिर्डी के साईं बाबा ने अपने जीवन, उपदेशों और लीलाओं के माध्यम से संपूर्ण मानव समाज को प्रदान की।

साईं बाबा केवल धार्मिक उपदेश देने वाले संत नहीं थे, बल्कि वे मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष को गहराई से समझने वाले सद्गुरु थे। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि ज्ञान का उद्देश्य केवल धन, पद या वैभव प्राप्त करना नहीं, बल्कि मनुष्य को बेहतर इंसान बनाना है। जब कोई व्यक्ति

सच्चे मन से ज्ञान, सेवा, सत्य और सदाचार के मार्ग पर चलता है, तब स्वयं साईं उसकी सहायता के लिए किसी न किसी रूप में अवश्य प्रकट होते हैं। इसीलिए भक्तों के हृदय से सहज ही यह वचन निकलता है – **साईं शिक्षा की राह पर चलते... मौके पर साईं आते हैं दौड़े।**

साईं बाबा का संपूर्ण जीवन इसी सत्य का जीवंत प्रमाण है। उन्होंने कभी किसी व्यक्ति के साथ धर्म, जाति, भाषा, अमीरी–ग़रीबी या सामाजिक स्थिति के आधार पर भेदभाव नहीं किया। उनके लिए हर प्राणी ईश्वर का अंश था। बाबा कहते थे कि जो व्यक्ति दूसरों से प्रेम करता है, दुखियों की सहायता करता है, सत्य और ईमानदारी का पालन करता है तथा विनम्रता के साथ जीवन जीता है, वही वास्तव में शिक्षित है।

आज संसार में शिक्षा का अर्थ प्रायः नौकरी, प्रतियोगिता और आर्थिक सफलता तक सीमित होता जा रहा है। लोग उच्च डिग्रियाँ प्राप्त कर लेते हैं, परंतु यदि उनके भीतर दया, सेवा, करुणा और मानवता का भाव न हो, तो वह शिक्षा अधूरी रह जाती है। साईं बाबा ने सदैव ऐसी शिक्षा पर बल दिया, जो मनुष्य को भीतर से महान बनाए। बाबा के अनुसार ज्ञान वही श्रेष्ठ है, जो मनुष्य के भीतर से अहंकार को समाप्त कर विनम्रता उत्पन्न करे।

बाबा का जीवन अत्यंत सरल था। वे परब्रह्म स्वरूप, महान संत और सद्गुरु होते हुए भी साधारण फ़क़ीर की तरह रहते थे। यही सादगी और विनम्रता संपूर्ण मानव समाज के लिए सबसे बड़ी शिक्षा है। आज मनुष्य ज्ञान प्राप्त करते ही स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ समझने लगता है, परंतु साईं बाबा सिखाते हैं कि जितना अधिक ज्ञान बढ़े, उतनी ही अधिक विनम्रता और सेवा की भावना भी बढ़नी चाहिए।

श्री साईं सत् चरित में अनेक ऐसे प्रसंग वर्णित हैं, जो यह सिद्ध करते हैं कि बाबा अपने भक्तों को केवल आध्यात्मिक शिक्षा ही नहीं देते थे, बल्कि जीवन की वास्तविक राह भी दिखाते थे। बाबा बार–बार कहते थे कि जीवन में दो बातें सबसे महत्वपूर्ण हैं – श्रद्धा और सबूरी। यही दोनों शब्द साईं शिक्षा का मूल आधार हैं।

श्रद्धा अर्थात् अटूट विश्वास। जब मनुष्य अपने सद्गुरु, अपने कर्तव्य और ईश्वर पर विश्वास रखता है, तब कठिन से कठिन परिस्थितियाँ भी उसे रोक नहीं पातीं। सबूरी अर्थात् धैर्य। आज अधिकांश लोग तुरंत सफलता चाहते हैं और थोड़ी असफलता आते ही निराश हो जाते हैं। परंतु, बाबा सिखाते हैं कि धैर्य और निरंतर प्रयास से ही स्थायी सफलता प्राप्त होती है।

मानव जीवन में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं; कभी आर्थिक संकट, कभी मानसिक तनाव, कभी असफलता का भय, कभी बीमारी, कभी परिवार की चिंता और कभी भविष्य की अनिश्चितता। ऐसे समय में यदि मनुष्य साईं बाबा के बताए श्रद्धा और सबूरी के मार्ग पर चलता है, तो उसका मन मज़बूत बनता है और वह टूटता नहीं। बाबा अपने भक्तों से कहते थे – ईश्वर पर भरोसा रखो और अपना कर्तव्य करते रहो। यही शिक्षा आज संपूर्ण मानव समाज के लिए अत्यंत आवश्यक है।

श्री साईं सत् चरित में वर्णित श्री बी. वी. देव के उद्यापन का प्रसंग इसका अत्यंत सुंदर उदाहरण है। जब श्री देव ने बाबा को उद्यापन में आने का निमंत्रण भेजा, तब बाबा ने कहा, ''जो मेरा स्मरण करता है, उसका मुझे सदैव स्मरण रहता है। मुझे आने–जाने के लिए किसी साधन की आवश्यकता नहीं। जो मुझे प्रेम से पुकारता है, मैं उसके सामने तुरंत प्रकट हो जाता हूँ।''

ये केवल शब्द नहीं थे, बल्कि साईं का दिव्य वचन था। बाबा स्वयं एक संन्यासी के रूप में दो बालकों के साथ वहाँ पहुँचे, भोजन ग्रहण किया और अपना वचन निभाया; किंतु श्री देव उन्हें पहचान नहीं सके। बाद में बाबा ने स्वयं बताया कि वे अपने वचन के अनुसार वहाँ उपस्थित हुए थे।

यह प्रसंग स्पष्ट करता है कि साईं बाबा अपने भक्तों को कभी अकेला नहीं छोड़ते। जब कोई व्यक्ति सच्चे मन से सदाचार, सेवा और साईं शिक्षा के मार्ग पर चलता है, तब बाबा किसी न किसी रूप में उसकी सहायता के लिए अवश्य दौड़ते हैं। वास्तव में यही भाव इस सत्य को प्रकट करता है – **साईं शिक्षा की राह पर चलते... मौके पर साईं आते हैं दौड़े।**

इसी प्रकार श्री रामचंद्र आत्माराम तर्खड़ के परिवार का प्रसंग भी अत्यंत प्रेरणादायक है। तर्खड़ परिवार अत्यंत श्रद्धा से बाबा की पूजा करता था। एक दिन भूलवश

रामचंद्र जी के हाथों बाबा को सुबह का भोग नहीं लगाया गया। उसी समय शिर्डी में बाबा ने उनकी पत्नी से कहा, मैं आज बांद्रा तुम्हारे घर भोजन के लिए गया था; पर मेरे लिए कुछ रखा नहीं गया, इसलिए मुझे भूखा लौटना पड़ा। यह सुन कर सभी आश्चर्यचकित रह गए। इससे स्पष्ट होता है कि बाबा केवल शिर्डी तक सीमित नहीं थे। वे अपने भक्तों के घर, उनके हृदय और उनके जीवन में सदैव उपस्थित रहते थे। जो व्यक्ति प्रेमपूर्वक बाबा का स्मरण करता है, बाबा उसके जीवन की छोटी–से–छोटी बात से भी परिचित रहते हैं।

साईं बाबा ने केवल पूजा–पाठ की शिक्षा नहीं दी, बल्कि सेवा, दया और समभाव का महान संदेश दिया। एक दिन श्रीमती तर्खड़ ने एक भूखे कुत्ते को रोटी खिलाई। शाम को बाबा ने शिर्डी में उपस्थित भक्तों के सामने उनसे कहा, आज तुमने मुझे बड़े प्रेम से भोजन कराया। मेरी भूखी आत्मा तृप्त हो गई।

जब वे इसका अर्थ न समझ सकीं, तब बाबा ने समझाया कि वही कुत्ता उनका ही स्वरूप था। बाबा ने कहा कि गाय, कुत्ता, बिल्ली, पक्षी और सभी प्राणी भी मेरे ही स्वरूप हैं। यह शिक्षा केवल धार्मिक विचार नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता का सबसे बड़ा संदेश है। जो व्यक्ति हर जीव में ईश्वर को देखता है, वही सच्चा शिक्षित और सच्चा भक्त कहलाता है। आज यदि मानव समाज साईं बाबा की इस शिक्षा को अपने जीवन में उतार ले, तो घृणा, अहंकार, हिंसा और भेदभाव स्वतः समाप्त हो सकते हैं।

श्री साईं सत् चरित में श्री चोलकर का प्रसंग भी अत्यंत भावुक करने वाला है। वे अत्यंत ग़रीब थे और बाबा के दर्शन के लिए पैसे बचाने हेतु उन्होंने अपनी चाय में चीनी (शक्कर) लेना तक छोड़ दिया था, ताकि उन पैसों से शिर्डी यात्रा का ख़र्च निकल सके। जब वे शिर्डी पहुँचे, तब बाबा ने उनके मन की बात जान ली और बापूसाहेब जोग से कहा, ''अपने अतिथि को चाय में खूब शक्कर डाल कर देना।''

यह सुनते ही चोलकर की आँखों से आँसू बहने लगे। बाबा ने यह दिखा दिया कि वे अपने भक्तों के त्याग, प्रेम और अंतर्मन की भावनाओं से पूर्णतः परिचित रहते हैं। भक्त चाहे कितनी भी गुप्त भावना अपने मन में रखे, बाबा उससे अनजान नहीं रहते।

शिक्षा के क्षेत्र में भी जब कोई विद्यार्थी सच्चे मन से प्रयास करता है, तब साईं बाबा किसी न किसी रूप में उसकी सहायता अवश्य करते हैं। कभी अच्छे गुरु के रूप में, कभी प्रेरणा के रूप में, कभी अवसर के रूप में और कभी आत्मविश्वास के रूप में। कई बार विद्यार्थी मेहनत तो करते हैं, लेकिन परिणाम तुरंत नहीं मिलता। ऐसे समय में निराशा आ जाती है। परंतु, साईं बाबा का संदेश है कि मेहनत कभी व्यर्थ नहीं जाती। ईश्वर उचित समय आने पर उसका फल अवश्य देते हैं। जो व्यक्ति ईमानदारी और मेहनत के साथ आगे बढ़ता है, उसके लिए रास्ते स्वयं

खुलते चले जाते हैं।

रघुनाथराव तेंडुलकर के पुत्र का प्रसंग इसका जीवंत उदाहरण है। उस युवक को ज्योतिषियों ने परीक्षा में असफल होने की बात कही थी, जिससे वह गहरे अवसाद और निराशा में चला गया था। बाबा ने तब उसे विशेष संदेश भेजा – ''मुझ पर विश्वास रखो, मन लगा कर अध्ययन करो; सफलता अवश्य मिलेगी।''

युवक ने बाबा की बात मान कर पूरे प्राणों से परिश्रम किया और अंततः परीक्षा में ससम्मान उत्तीर्ण हुआ। यह प्रसंग सिखाता है कि भाग्य से अधिक महत्वपूर्ण पुरुषार्थ, कर्म और आत्मविश्वास है। साईं बाबा अंधविश्वास के घोर विरोधी थे। जब भक्त श्रद्धा, सबूरी और निष्काम भाव से कर्म करता है, तब बाबा स्वयं उसके मार्गदर्शक बन जाते हैं।

जब राधाकृष्णमाई तेज बुख़ार से पीड़ित थीं, तब बाबा ने अलौकिक रूप से अचानक उनके घर की छत तक पहुँच कर अपनी व्याकुलता दिखाई थी। यह प्रसंग स्पष्ट करता है कि बाबा केवल उपदेशों तक सीमित नहीं

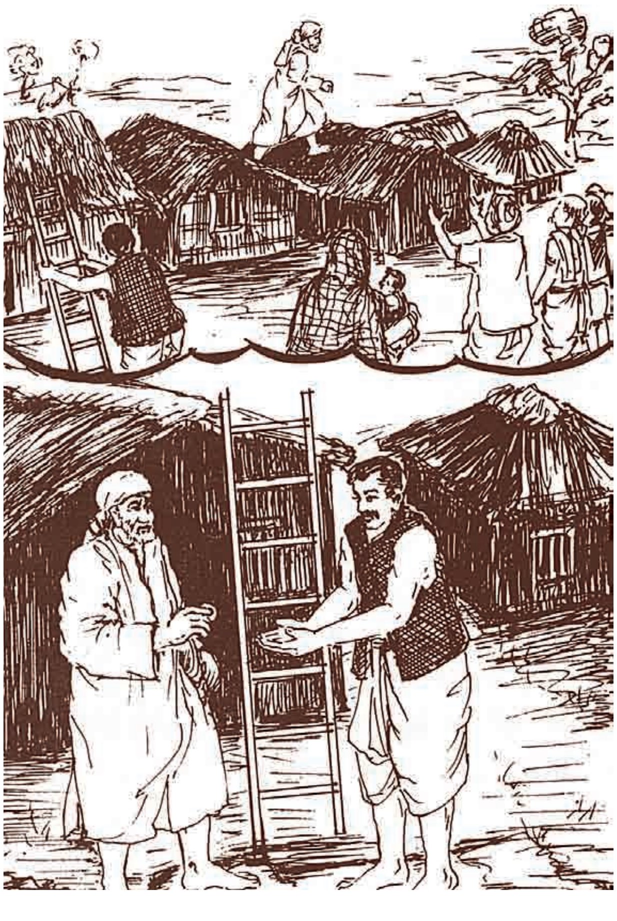

थे, बल्कि संकट की घड़ी में अपने भक्तों की रक्षा के लिए उनका यह अलौकिक रूप ही वास्तविक साईं शिक्षा का प्रमाण है। यह घटना दर्शाती है कि जब कोई भक्त सच्चे मन से उनके मार्ग पर चलता है, तो उसके दुःख और संकट को दूर करने के लिए बाबा स्वयं दौड़ते हैं; इसीलिए भक्तों का यह विश्वास अडिग है कि – **साईं शिक्षा की राह पर चलते... मौके पर साईं आते हैं दौड़े।**

इसी तरह, बाबा श्रम के सम्मान को सर्वोपरि मानते थे। बाबा के कहने पर एक व्यक्ति ने राधाकृष्णमाई के घर की छत पर सीढ़ी लगाई। वह एक बहुत छोटा और चंद मिनटों का कार्य था; परंतु कार्य पूर्ण होते ही बाबा ने सीढ़ी लगाने वाले व्यक्ति को तुरंत मेहनताना दिया और कहा, ''किसी का श्रम बिना मूल्य चुकाए नहीं लेना चाहिए।''

यह प्रसंग साईं बाबा की कर्म, न्याय और श्रम सम्मान की शिक्षा का श्रेष्ठ उदाहरण है। बाबा सदैव कहते थे कि श्रमिक का सम्मान करना ही सच्ची मानवता है; चाहे कार्य कितना भी छोटा क्यों न हो, किसी का श्रम बिना उचित मूल्य दिए नहीं लेना चाहिए। जो व्यक्ति इस प्रकार ईमानदारी, न्याय और सदाचार के मार्ग पर चलता है, बाबा उसके जीवन की उन्नति में सदैव सहायक बनते हैं।

श्री साईं सत् चरित में अनेक ऐसे पावन प्रसंग वर्णित हैं, जहाँ बाबा ने प्रकृति के भीषण प्रकोप, जानलेवा महामारियों और आकस्मिक संकटों से अपने भक्तों की साक्षात् रक्षा की। ये घटनाएँ केवल चमत्कार नहीं हैं, बल्कि संकट के समय अडिग रहने और ईश्वर पर पूर्ण विश्वास रखने की व्यावहारिक साईं शिक्षा हैं। बाबा अपने जीवन और आचरण से सदैव यह सिखाते थे कि जब विपत्ति का घोर अंधकार मनुष्य को घेर ले, तब केवल 'श्रद्धा और सबूरी' ही उसका संबल बनती हैं। जो भक्त उनके दिखाए इस कल्याणकारी मार्ग पर चलते हैं, बाबा उनकी रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं; क्योंकि संपूर्ण ब्रह्मांड में यह परम सत्य गूँजता है कि – **साईं शिक्षा की राह पर चलते... मौके पर साईं आते हैं दौड़े।**

शिर्डी में एक बार अत्यंत भयंकर तूफ़ान, आँधी

और मूसलाधार वर्षा प्रारंभ हो गई, जिससे चारों ओर भय और महाविनाश का वातावरण उत्पन्न हो गया। समस्त ग्रामवासी अपनी जान बचाने के लिए व्याकुल होकर द्वारकामाई मस्जिद में पहुँचे और बाबा से जीवन रक्षा की प्रार्थना करने लगे। भक्तों की दर्दभरी और दुखी आवाज़/पुकार सुनते ही दयालु बाबा तुरंत उठे, मस्जिद के खुले किनारे पर आकर खड़े हुए और आकाश की ओर तीव्र दृष्टि डाल कर गर्जना करते हुए बोले, ''बस, शांत हो जाओ।'' बाबा की इस अद्भुत साईं शिक्षा ने प्रकृति को भी अनुशासन सिखा दिया और कुछ ही क्षणों में वह भयंकर तूफ़ान, वर्षा और आँधी पूरी तरह थम गई। यह प्रसंग दर्शाता है कि जब मनुष्य प्राकृतिक विपदाओं से घिर जाता है, तब बाबा की शरण ही उसे अभयदान देती है।

इसी प्रकार, एक अन्य दिन द्वारकामाई–मस्जिद में धूनी की पवित्र अग्नि अचानक अत्यधिक प्रचंड हो गई और उसकी विनाशकारी लपटें ऊपर लकड़ी की सूखी छत तक पहुँचने लगीं, जिससे वहाँ उपस्थित भक्त प्राण-भय से काँप उठे। किसी को जब कोई उपाय नहीं सूझा, तब बाबा ने स्वयं स्थिति को संभाला और अपना सटका (सोटा) उठा कर मस्जिद के खम्भे पर पूरी शक्ति से प्रहार करते हुए आज्ञा दी – ''नीचे उतर जाओ, शांत हो जाओ!'' बाबा के इस कड़े अनुशासन और प्रत्येक प्रहार के साथ वह धधकती अग्नि तुरंत शांत होती गई। बाबा की यह साईं शिक्षा हमें सिखाती है कि जब हमारे जीवन में विकारों और संकटों की अग्नि भड़कने लगे, तब सद्गुरु के वचनों का अनुशासन ही उसे शांत कर सकता है।

एक बार ज्योतिषी ने बापूसाहेब बूटी की कुंडली देख कर उन्हें एक निश्चित दिन प्राण संकट होने की गंभीर चेतावनी दी थी, जिससे डरे और सहमे हुए वे सीधे बाबा की शरण में पहुँचे। बाबा ने उनके मन के गहरे डर को पहचान कर उन्हें पूर्णतः निर्भय करते हुए कहा, ''डरो मत; देखता हूँ काल तुम्हारा क्या कर लेता है!'' उसी दिन नियति के अनुसार शौचालय में उन्हें एक अत्यंत

भयंकर विषधर सर्प दिखाई दिया; परंतु बाबा के अभय वचनों के दिव्य प्रभाव से वह सर्प उन्हें बिना कोई हानि पहुँचाए चुपचाप वहाँ से चला गया। बाबा की यह साईं शिक्षा सिद्ध करती है कि दृढ़ विश्वास रखने वाले भक्त का काल भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता और संकट के चरम क्षणों में बाबा अदृश्य रूप से उसकी ढाल बन जाते हैं।

शिर्डी में एक बार जब महामारी फैली, तब ग्रामवासियों ने अंधविश्वासवश गाँव में अनेक प्रकार के प्रतिबंध लगा दिए थे। बाबा ने इन रूढ़ियों का कड़ा विरोध करते हुए लोगों को समझाया कि भय और अंधविश्वास किसी संकट का समाधान नहीं हैं, बल्कि विवेक और सेवा ही सच्ची साईं शिक्षा है। उन्होंने स्वयं अग्रिम मोर्चे पर रह कर द्वारकामाई की धूनी सतत जलती रखी, लोगों को उदी (राख) दी, उनके भीतर साहस बँधाया और मानवता की सेवा का मार्ग दिखाया। बाबा की इस व्यावहारिक साईं शिक्षा और उनके इस अभयदान ने सिद्ध कर दिया कि जब समाज घोर संकट और निराशा में डूब जाता है, तब भक्तों की रक्षा के लिए – **साईं शिक्षा की राह पर चलते... मौके पर साईं आते हैं दौड़े।**

बाबा ने कभी धूनी में हाथ डाल कर जलते अंगारों से एक बालिका के प्राण बचाए, तो कभी भयानक सर्पदंश

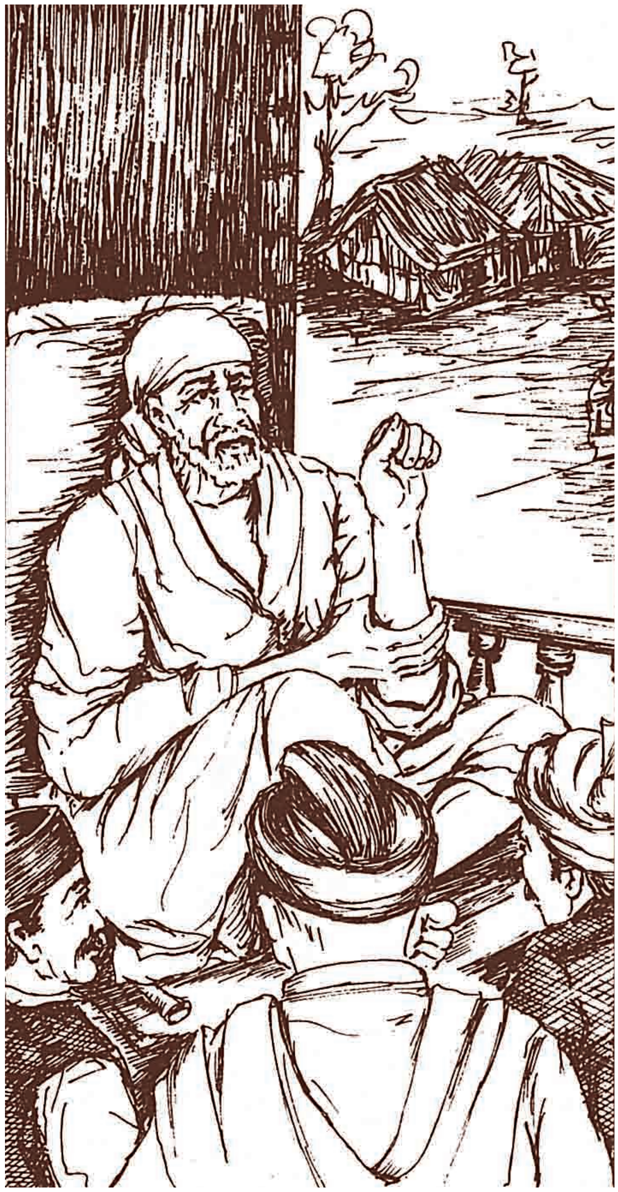

से पीड़ित अपने परम भक्त शामा की रक्षा केवल अपनी आज्ञा से विष उतार कर की। रोगियों को मानसिक शक्ति देना और मरणासन्न लोगों को नया जीवन देना उनकी नित्य लीला थी।

इन सभी प्रसंगों का एकमात्र सार यही है कि जब भक्त श्रद्धा और विश्वास के साथ साईं की शरण में जाते हैं, तब संकट की घड़ी में बाबा स्वयं दौड़े चले आते हैं।

आज संसार में तनाव, भय, भीषण प्रतियोगिता और स्वार्थ बहुत बढ़ गया है। मनुष्य बाहरी भौतिक सुखों के पीछे अंधाधुंध दौड़ रहा है, परंतु उसे आत्मिक शांति नहीं मिल रही। परिवारों में अशांति है और समाज में संकीर्णता बढ़ रही है। ऐसे समय में साईं बाबा की शिक्षाएँ

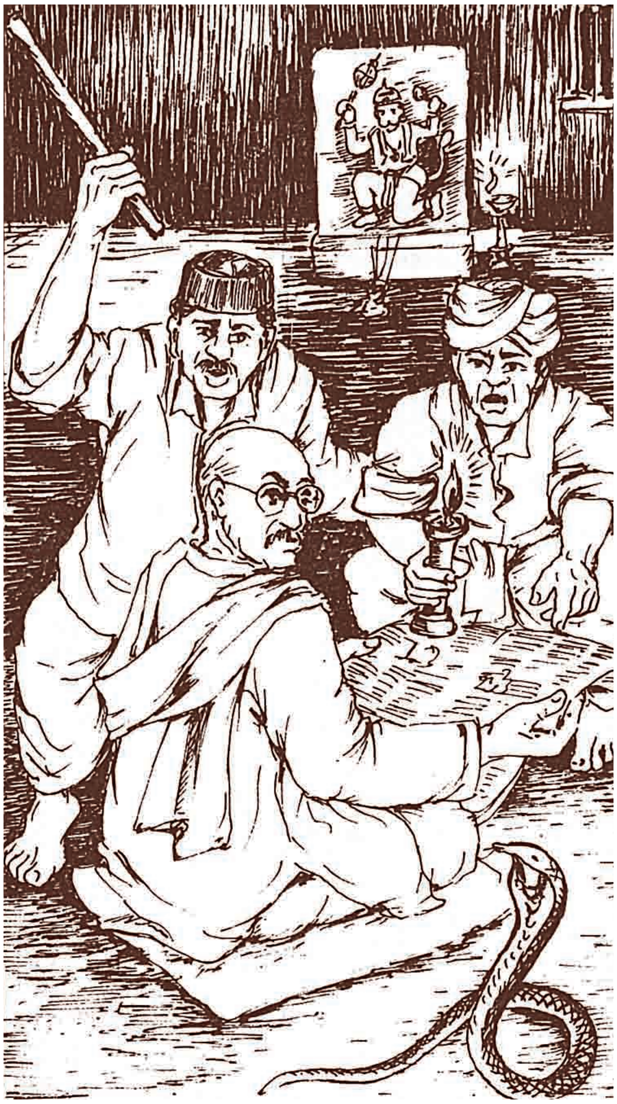

केवल धार्मिक उपदेश नहीं, बल्कि जीवन जीने की परम पावन और व्यावहारिक राह हैं।

बाबा सिखाते हैं कि सच्चा सुख धन, पद या वैभव में नहीं, बल्कि ईश्वर के स्मरण, निस्वार्थ सेवा, आपसी प्रेम और संतोष में है। केवल बाहरी पूजा-पाठ या कर्मकांड पर्याप्त नहीं हैं, हृदय की पवित्रता और प्रत्येक जीव के प्रति करुणा ही सबसे बड़ी साधना है।

बाबा का स्पष्ट संदेश था कि साईं-साईं का निरंतर नाम-स्मरण मनुष्य को समस्त भयों और दु:खों से मुक्त कर सकता है। जब मनुष्य संसार के मोह, चिंता, लोभ और अहंकार से ऊपर उठ कर बाबा का स्मरण करता है, तब उसके भीतर की अशांति धीरे-धीरे समाप्त होने लगती है।

श्री साईं सत् चरित में सद्‌गुरु की महिमा का विशेष वर्णन मिलता है। बाबा स्वयं अपने गुरु के प्रति अत्यंत पूज्य भाव और अगाध श्रद्धा रखते थे। वे कहते थे कि गुरु ही मनुष्य को अज्ञान के गहन अंधकार से निकाल कर ज्ञान के परम प्रकाश की ओर ले जाता है। आज के आधुनिक समाज के लिए यह शिक्षा अत्यंत आवश्यक है कि माता-पिता, गुरुजनों और मार्गदर्शकों का हृदय से सम्मान किया जाए। माता-पिता जीवन की पहली पाठशाला होते हैं और गुरु जीवन को सत्य का मार्ग दिखाने वाले प्रकाशस्तंभ।

बाबा यह भी बताते थे कि केवल पुस्तकीय ज्ञान

पर्याप्त नहीं है, बल्कि ऐसा ज्ञान आवश्यक है जो मनुष्य को विनम्र बनाए। उन्होंने भक्तों को अपनी-अपनी रुचि और धर्म के अनुसार गीता, ज्ञानेश्वरी, विष्णुसहस्रनाम, रामायण और अन्य पवित्र धर्मग्रंथों के नियमित अध्ययन के लिए प्रेरित किया। उनका मानना था कि ऐसा स्वाध्याय वह दीपक है, जो मानवीय बुद्धि को शुद्ध करता है और अज्ञान, भय तथा दुःख के अंधकार को समूल नष्ट कर देता है।

यदि मनुष्य साईं बाबा की राह पर चलना शुरू कर दे, तो उसके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आने लगते हैं। उसका मन शांत होता है, विचार पवित्र होते हैं और जीवन में आत्मविश्वास बढ़ता है। सबसे बड़ी बात यह है कि उसे हर परिस्थिति में यह अनुभव होने लगता है कि वह इस संसार में अकेला नहीं है – साईं बाबा उसकी ढाल बन कर उसके साथ हैं।

यदि हमारा आज का शिक्षित और आधुनिक समाज अपनी व्यक्तिगत उन्नति के साथ-साथ सामाजिक कल्याण का भी एक बड़ा संकल्प ले, तो यह शिर्डी के साईं बाबा की सबसे सच्ची भक्ति होगी। इस संकल्प के तहत यदि हम झुग्गी-झोपड़ियों और सड़कों पर रहने वाले बेसहारा बच्चों को मुफ़्त शिक्षा दें, समाज के लाचार एवं ज़रूरतमंद लोगों तक समय पर बुनियादी मदद पहुँचाए और दुर्घटनाग्रस्त घायलों या असहाय रोगियों की तन, मन एवं धन से सेवा करें, तो हम मानवता की सबसे बड़ी सेवा कर सकेंगे। दूसरों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का यही नि:स्वार्थ प्रयास साईं बाबा के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धा और आदर का प्रतीक बनेगा।

वास्तविक, साईं शिक्षा का मूल मंत्र ही यही है कि जो ज्ञान, बुद्धि और सामर्थ्य हमें ईश्वर से मिला है, उसका उपयोग केवल धन अर्जित करने में नहीं, बल्कि पूरे मानव समाज के कल्याण और उत्थान के लिए किया जाए। वह शिक्षा जो मनुष्य को केवल चतुर, चालाक और बौद्धिक रूप से तीव्र तो बनाती है, लेकिन दूसरों का दुःख देख कर भी जिसका हृदय पत्थर की तरह कठोर और संवेदनहीन बना रहता है, वह पुस्तकीय ज्ञान पूरी तरह से अधूरा, खोखला और व्यर्थ है।

शिर्डी के साईं समर्थ अपने भक्तों को इस संसार के झंझावातों और कठिनाइयों में कभी भी अकेला या बेसहारा नहीं छोड़ते। वे किसी एक निश्चित स्थान या मूर्ति तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे सृष्टि के हर कण में, हर समय और जीवन की हर विषम परिस्थिति में पूरी प्रगाढ़ता के साथ हर जगह मौजूद हैं। जब भी कोई व्याकुल भक्त समस्त सांसारिक छल-कपट को छोड़ कर, पूरी मासूमियत, निश्छल प्रेम और अटूट विश्वास के साथ अंतरात्मा से उन्हें पुकारता है, तो बाबा उसकी पुकार कभी अनसुनी नहीं करते और किसी न किसी मानवीय रूप में या अदृश्य शक्ति बन कर उसकी सहायता के लिए अवश्य प्रकट हो जाते हैं।

संकट के उस दौर में कई बार तो भक्त को तुरंत यह समझ भी नहीं आता कि अचानक बिगड़े हुए काम कैसे बन गए या उसकी इतनी बड़ी मदद किसने कर दी; परंतु बाद में जब समय बीतता है और जीवन की बिखरी हुई कड़ियाँ आपस में जुड़ती हैं, तब उसे अंतर्मन से यह साक्षात् एहसास होता है कि वह समय पर मिली चमत्कारी और अदृश्य सहायता कोई संयोग नहीं, बल्कि स्वयं साईं बाबा की बिना किसी स्वार्थ के बरसने वाली अहैतुकी कृपा थी।

शामली (उत्तर प्रदेश) में साईं मंदिर निर्माण के

आधुनिक प्रसंग को देखें – वहाँ भूमि का चयन होना, लोगों का अप्रत्याशित सहयोग मिलना, ध्यान में बाबा के साक्षात् दर्शन होना तथा निर्माण के दौरान बार-बार सही दिशा का संकेत मिलना यह दर्शाता है कि बाबा केवल इतिहास के पन्नों तक सीमित नहीं हैं; वे आज भी उतने ही जाग्रत हैं और अपने भक्तों का मार्गदर्शन कर रहे हैं। जब भक्त निष्काम भाव, श्रद्धा और सेवा के उद्देश्य से कोई कार्य प्रारंभ करता है, तब बाबा स्वयं अदृश्य शक्ति बन कर उस कार्य को निर्विघ्न पूर्ण कराते हैं।

वास्तव में, साईं बाबा आज भी अपने भक्तों के जीवन में उपस्थित हैं। जो व्यक्ति सच्चे मन से उनकी शिक्षाओं को अपनाता है, संकट की घड़ी में बाबा उसकी सहायता अवश्य करते हैं। इसलिए यह कहना पूर्णतः सत्य है – **साईं शिक्षा की राह पर चलते... मौके पर साईं आते हैं दौड़े।**

साईं बाबा महासमाधि लेने के बाद आज भी उतने ही जाग्रत हैं और अपने करोड़ों भक्तों के जीवन की हर धड़कन में साक्षात् धड़क रहे हैं। जो भी व्यक्ति बाह्य आडंबरों, दिखावे और पाखंड से दूर रह कर, सच्चे और निर्मल मन से बाबा के बताए आदर्शों को अपने रोज़मर्रा के आचरण में उतारता है, मूक पशु-पक्षियों और असहाय जीवों पर निस्वार्थ दया करता है तथा अपने भीतर के 'मैं' यानी अहंकार और घमंड को पूरी तरह त्याग कर 'श्रद्धा और सबूरी' के परम सिद्धांतों के साथ जीवन जीता है, उसके जीवन की सबसे कठिन और पथरीली राह भी बेहद सुगम, सरल और दिव्य प्रकाश से सराबोर हो जाती है। कठिनाइयों से घिरे इस आधुनिक युग में भक्तों का सदियों पुराना यह अनुभव-सिद्ध और प्रामाणिक विश्वास आज भी त्रिकाल सत्य है; क्योंकि जब मनुष्य मानवता, करुणा और निस्वार्थ सेवा के इस पावन मार्ग को चुनता है, तब उसकी रक्षा के लिए ब्रह्मांड की महाशक्ति स्वयं तत्पर हो जाती है और भक्त के हृदय से अनायास ही यह दिव्य जयघोष गूँज उठता है कि – **साईं शिक्षा की राह पर चलते... मौके पर साईं आते हैं दौड़े।**

श्री नारायणा वासुदेवाय सच्चिदानंद
समर्थ सद्गुरु श्री साईनाथाय नमः।।

– सुरेश चन्द्रा
जे – ३४ (भू-तल),
साऊथ एक्सटेंशन – १, नई दिल्ली – ११० ०४९.
ई-मेल : sureshchandra1962@gmail.com
संचार ध्वनि : (०)९८१८६३९००२

❍❍❍

माघ कवि से साईं चरण तक...

विश्वास का दिव्य दीपक

पुरातन पद्धति के अनुसार श्री हेमाडपंत 'श्री साईसच्चरित' का आरंभ वंदना द्वारा करते हैं।

प्रथम श्री गणेश को साष्टांग नमन करते हैं, जो कार्य को निर्विघ्न समाप्त कर उसको यशस्वी बनाते हैं।...

... फिर श्री भारद्वाज मुनि को, जिनके गोत्र में उनका जन्म हुआ। पश्चात् उन ऋषियों को, जैसे - याज्ञवल्क्य, भृगु, पाराशर, नारद, वेदव्यास, सनक-सनंदन, सनत्कुमार, शुक, शौनक, विश्वामित्र, वसिष्ठ, वाल्मीकि, वामदेव, जैमिनी, वैशंपाय, नव योगींद्र इत्यादि तथा आधुनिक संत, जैसे - निवृत्ति, ज्ञानदेव, सोपान, मुक्ताबाई, जनार्दन, एकनाथ, नामदेव, तुकाराम, कान्हा, नरहरि आदि को नमन करते हैं।

- श्री साईसच्चरित, अध्याय १

साधु और संत भगवान् के प्रतिनिधिस्वरूप हैं।

- श्री साईसच्चरित, अध्याय ४

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
तत्वज्ञानं परमं शांति प्राप्यते हि आत्मनः।।

- बृहदारण्यक उपनिषद, ४.३.२३

("इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र कुछ नहीं। आत्मा द्वारा प्राप्त परम ज्ञान ही सच्ची शांति प्रदान करता है।")

कभी-कभी मेरे हृदय में एक मौन भाव उठता है - एक सतर्क चेतावनी सी, कि कहीं मेरा भाग्य भी किसी मोड़ पर माघ कवि की भाँति न हो जाए। वह कवि, जिसने जीवन में ऐश्वर्य, वैभव और विलासिता का अनुभव किया, पर समय की अनपेक्षित चालों में अचानक संपूर्णता का क्षय झेला।

परंतु, यह विचार मुझे भयभीत नहीं करता। कोई उलझन भी नहीं, केवल स्थिर, विनम्र श्रद्धा और अहंकारशून्य समर्पण का भाव त्वरित ही मन में जागृत होता है। इसका केंद्रबिंदु है...

श्री साईं बाबा के चरण

जिनमें मेरा मन स्वयं को निस्तेज, लघु और समर्पित अनुभव करता है।

माघ कवि का जीवन : क्षणिक वैभव और स्थायी विनम्रता का पाठ

माघ कवि, अपने समय के अत्यंत प्रतिष्ठित

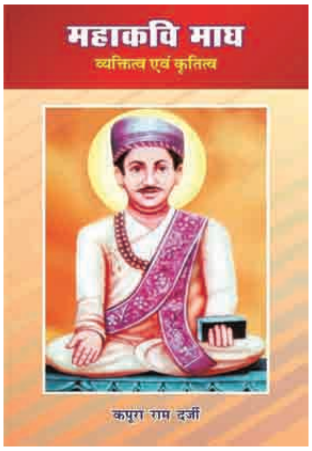

और धनाढ्य कवि, जीवन में विलासिता और वैभव का अनुभव करने वाले थे। उनके काव्य में शब्दों की मधुरता और शृंगारी अलंकार का अनुपम संगम था। परंतु, जीवन की अनिश्चितताओं में उन्हें दिखा कि संसार का वैभव क्षणभंगुर है। उनका पतन हमें स्मरण कराता है कि आत्मा की स्थायी शांति और मूल्य केवल बाह्य ऐश्वर्य में नहीं, बल्कि वास्तविक समर्पण और निश्चल भक्ति में निहित है।

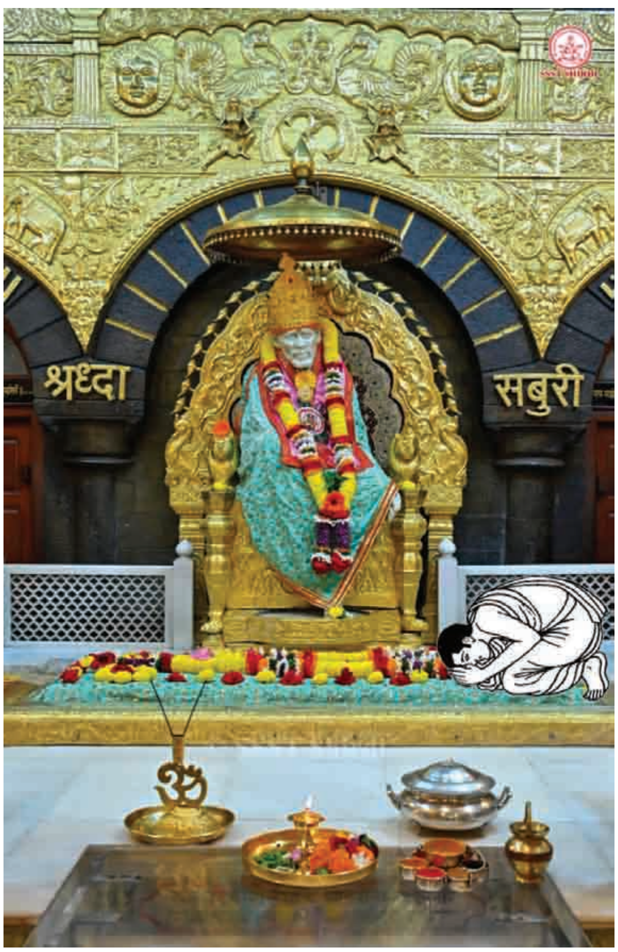

सर्वेषु कालेषु यत्किंचिदपि दु:खमुत्तमम्।
तस्मिन्नात्मनं समाश्रित्य विनश्यति कलेशभि:।।

– श्रीमद् भगवद्गीता, ६.५

(''सभी समय और परिस्थिति में यदि व्यक्ति आत्मा में स्थित होकर समर्पित रहे, तो सभी दु:खों का विनाश होता है।'')

माघ कवि अपने वैभव और पतन की मँझधार के बीच अटके रहे और मैंने उनसे ही सीखा कि मेरे लिए स्वयं को श्री साईं बाबा के श्री–चरणों में पूर्ण श्रद्धा और अहंकारशून्य विश्वास के साथ समर्पित कर देना ही एकमात्र विकल्प है। सुख–दु:ख, वैभव – अल्पता – सभी अनुभव केवल एक दिव्य नियोजन में अवस्थित परीक्षा प्रतीत होते हैं।

साईं में दृढ़ विश्वास : अहंकार से परे

श्री साईं में मेरी आस्था का स्वरूप केवल श्रद्धा और समर्पण का है; न इससे अधिक और न इससे कम। यह अहंकार या आत्ममूल्यांकन का मंच नहीं है। जैसे दीपक अंधकार में प्रकाश फैलाता है, वैसे ही साईं की कृपा में मन विनम्र, स्थिर और आलोकित रहता है। मैं स्वयं को महान्, श्रेष्ठ या विशिष्ट नहीं मानता; केवल यह मानता हूँ कि उनके चरणों में समर्पण ही सच्ची स्थिरता और शांति का स्त्रोत है।

यथा दीपो निवातस्थो
नेङ्गते स्यात् तस्मिन्समं चेतसा।
न हि अहंकारो भवति सच्चिदानंदमयं जीवनम्।।

(''जैसे दीपक स्थिर होकर अंधकार को दूर करता है, वैसे ही मन की स्थिरता और अहंकारहीनता जीवन को परम आनंद और शांति प्रदान करती है।'')

कविवर माघ की कथा और मेरी मन:स्थिति का

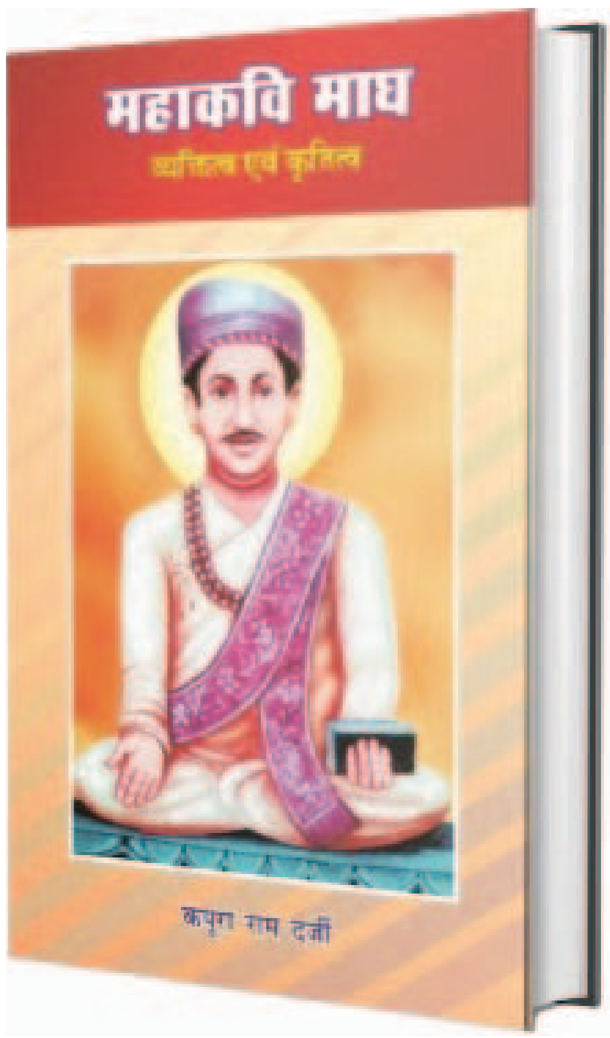

यह दृष्टांत केवल जीवन की अनित्य प्रकृति और स्थायी विश्वास को उजागर करता है। यह कोई स्वमहिमान या अभिमान नहीं, बल्कि विनम्र आत्मावलोकन और श्रद्धापूर्ण स्मरण है।

विनम्रता और भक्ति का संदेश

इस दृष्टि से यदि मेरा जीवन पथ भी किसी मोड़ पर माघ कवि के समान विपरीत परिस्थितियों से गुज़रता है, तो मैं पलके झुका कर श्री साईं के चरणों में अपना मन विनम्र, अटल और पूर्ण स्थिर भाव से समर्पित करते हुए अपने इस परमेश्वर से बारंबार यही प्रार्थना करता रहूँगा कि वे मेरे विश्वास को दृढ़ बनाए रखें। यही विश्वास मेरे शेष जीवन को न केवल सहनीय, अपितु सार्थक एवं दिव्यता से आलोकित करता रहेगा।

न मे अहंकारो न मे काम:
न मे लोभो न मे द्वेष:।
सर्वेऽहंकारविहीनोऽस्मि तस्मै साई नमो नम:।।

(''मेरे मन में न अहंकार है, न काम, न लोभ, न द्वेष। अहंकारहीन मन से मैं साईं को प्रणाम करता हूँ।'')

माघ कवि को वैभव और पतन तथा मेरी अनुभूति – इस द्वंद्व में हमें स्मरण होता है कि जीवन का वास्तविक वैभव न ऐश्वर्य में, न शब्दों की महिमा में है, अपितु विनम्र समर्पण और आत्मा की स्थिरता और यही विश्वास मानव जीवन का सच्चा धन, सर्वोच्च सौंदर्य

और परम आदर्श है, जिसमें अहंकार को लेशमात्र भी स्थान नहीं है।

अहंकारहीनता का चरम अनुभव

साईं भक्ति में अहंकारहीनता केवल विनम्रता की परिणति नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक अनुभव की आत्मा है। अपने भावों और माघ कवि की कथा को जोड़ कर यह स्पष्ट होता है कि संसार का क्षणिक वैभव केवल शब्दों और घटनाओं की आभासी प्रतिमा है, पर साईं में समर्पित आत्मा का ध्यान, स्थिरता और दिव्यता का प्रतीक है।

न मे स्मृतिः कृतिः न मे प्रिया न मे द्वेष किंचन।
अहंकारहीन मनः सदा स्थिरोऽस्मि साई चरणे।।

(''मेरे मन में स्मृति, कृत्य, प्रिय या द्वेष की कोई जगह नहीं; अहंकारहीन मन सदा साईं चरणों में स्थिर है।'')

यह अहंकारहीन मन जीवन के हर अनुभव को सच्चे दृष्टिकोण और दिव्यता के प्रकाश में देखता है। यही स्थिरता, यही विश्वास और यही विनम्रता मानव जीवन का सर्वोच्च आदर्श और दिव्य मार्ग है।

साईं रहम नज़र करना बच्चों का पालन करना,
जाना तुमने जगत् पसारा सब ही झूठ ज़माना,
साईं रहम नज़र करना...

मैं अँधा हूँ बंदा आपका मुझको प्रभु दिखलाना,
मैं अँधा हूँ बंदा आपका मुझको चरण दिखलाना,
साईं रहम नज़र करना...

– (स्व.) प्रो. डॉ. सुबोध अग्रवाल

❍❍❍

श्री अक्कलकोट महाराज के एक भक्त, जिनका नाम भाई कृष्णाजी अलीबागकर था, उनके चित्र का नित्य-प्रति पूजन किया करते थे। एक समय उन्होंने अक्कलकोट (सोलापुर ज़िला, महाराष्ट्र राज्य) जाकर महाराज की पादुकाओं का दर्शन एवं पूजन करने का निश्चय किया। परंतु, प्रस्थान करने के पूर्व अक्कलकोट महाराज ने स्वप्न में दर्शन देकर उनसे कहा कि आज-कल शिर्डी ही मेरा विश्राम स्थल है और तुम वहीं जाकर मेरा पूजन करो। इसलिए भाई ने अपने कार्यक्रम में परिवर्तन कर शिर्डी जाकर श्री साईं बाबा की पूजा की। वे आनंदपूर्वक शिर्डी में छः मास रहे और इस स्वप्न की स्मृति-स्वरूप उन्होंने पादुकाएँ बनवाईं। शक सं. १८३४ में श्रावण में शुभ दिन देख कर नीम वृक्ष के नीचे वे पादुकाएँ स्थापित कर दीं। दादा केलकर तथा उपासनी महाराज ने यथाविधि स्थापना उत्सव सम्पन्न किया। एक दीक्षित ब्राह्मण पूजन के लिए नियुक्त कर दिया गया और प्रबंध का कार्य एक भक्त सगुण मेरू नायक को सौंपा गया।

❍❍❍

...चाहे कोई कितना ही विद्वान अथवा वेद और वेदांत में पारंगत क्यों न हो, वह अपने निर्दिष्ट स्थान पर नहीं पहुँच सकता, जब तक कि उसकी सहायतार्थ कोई योग्य पथप्रदर्शक न मिल जाए, जिसके पदचिन्हों का अनुसरण करने से ही मार्ग में मिलने वाले गह्वरों, खंदकों तथा हिंसक प्राणियों के भय से मुक्त हुआ जा सकता है और इस विधि से ही संसार-यात्रा सुगम तथा कुशलतापूर्वक पूर्ण हो सकती है। इस विषय में बाबा का अनुभव (श्री साईं सत् चरित के अ. ३२ में वर्णित), जो उन्होंने स्वयं बतलाया, वास्तव में आश्चर्यजनक है। यदि हम उसका ध्यानपूर्वक अनुसरण करें तो हमें निश्चय ही श्रद्धा, भक्ति और मुक्ति प्राप्त होगी।

– श्री साईं सत् चरित अध्याय ५ और ३२ –

साईं... सुबोध...

कभी मिले नहीं। कभी देखा नहीं। बस, नाम से परिचित था। प्रो. डॉ. सुबोध अग्रवाल। 'श्री साईं लीला' पत्रिका में प्रकाशित उनके लेख पढ़ा करता था। श्री साईं बाबा से संबंधित विषय–वस्तु पर उनकी गहरी पकड़ थी। किंतु, मैं विशेष रूप से उनकी भाषा शैली से अधिक प्रभावित था। पहली बार फ़ोन पर बात हुई। महीन, मीठी आवाज़। विनम्रता कूट–कूट कर भरी हुई थी। बस प्रेम हो गया। फिर अक्सर बातें होती रहीं फ़ोन पर। मैंने कहा, ''आपके लेख पढ़ता हूँ। बरबस ही मेरा ध्यान विषय–वस्तु से हट कर आपकी अंग्रेज़ी पर टिक जाता है। भाषा–सौंदर्य में इतना डूब जाता हूँ कि पढ़ क्या रहा हूँ, भूल ही जाता हूँ। साहित्यिक स्तर की ऐसी उत्कृष्ट भाषा सामान्यत: धार्मिक–आध्यात्मिक विषय की रचनाओं में बहुत कम पढ़ने को मिलती है। मुझे अपने, प्रसिद्ध शायर और अंग्रेज़ी साहित्य के प्रोफ़ेसर फ़िराक़ गोरखपुरी के छोटे भाई, प्रोफ़ेसर यदुपति सहाय की याद आ जाती है।'' फ़ोन पर उधर से हल्की सी हँसी सुनाई दी। बोले, ''अजी, क्या बात करते हैं! कहाँ वे, कहाँ मैं?'' उनके स्वर में गर्व या अहंकार लेश मात्र न था। इससे भी अधिक आश्चर्य, उनकी निरहंकारिता और उदारता पर तब हुआ, जब उन्होंने 'श्री साईं लीला' पत्रिका में छपी मेरी रचना 'श्री साईं चालीसा' की भूरि–भूरि प्रशंसा की। आम तौर पर एक लेखक दूसरे लेखक की प्रशंसा अक्सर नहीं करता, या बहुत कम करता है। प्रो. डॉ. सुबोध अग्रवाल के व्यक्तित्व की उदात्तता और महानता का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है। स्वयं प्रकांड विद्वान और महान भाषा विज्ञानी होकर भी उनका विनम्र, स्नेहिल, उदार और विशाल हृदय दूसरों का स्वागत और आलिंगन करने के लिए सदैव बाहें फैलाए रहता था। साईं भक्ति उन्हें विरासत में अपने माता–पिता से मिली थी। साईं श्रद्धा उनके जन्मजात संस्कारों में थी। सद्गुणों का भंडार तो होना ही था उन्हें! उनसे मिलने की बड़ी इच्छा थी, जो पूरी ना हो सकी।

परमात्मा उनकी दिव्य जीवात्मा को शांति प्रदान करें। विश्वास है, श्री साईंनाथ अपने लाड़ले सपूत को अपने श्री–चरणों में स्थान अवश्य देंगे। इन शब्दों के साथ मैं उस महाविभूति को सभी साईं भक्तों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। मुझे नभमंडल से झरता स्वर सुनाई दे रहा है। शायद सुबोध जी अपनी महीन मधुर आवाज़ में मेरी कविता गुनगुना रहे हैं...

... मैं पंछी नटनागर का हूँ...
सदा रहा हूँ, सदा रहूँगा...
रूप न रंग, न गंध बिना गुण,
फिर भी मैं सबमें बसता हूँ।
सत्य सनातन, परम पुरातन,
ना जन्मा हूँ, ना मरता हूँ।
... मैं पंछी नटनागर का हूँ...
काट सकेगा शस्त्र न कोई,
आग ना मुझको जला सकेगी।
भिगो सकेंगे मेघ न सागर,
हवा न हरगिज़ सुखा सकेगी।
... मैं पंछी नटनागर का हूँ...

आज यहाँ, तो और कहीं कल,
यात्रा करता मैं रहता हूँ।
जन बदलें ज्यों बसन पुराने,
देह बदलता मैं रहता हूँ।
... मैं पंछी नटनागर का हूँ...
संग तुम्हारे पहले भी था,
आगे भी मैं संग रहूँगा।
भले न पहचानो, तुमसे
किसी रूप में कहीं मिलूँगा।
... मैं पंछी नटनागर का हूँ...
शोक न करना मेरे प्यारों,
जब मैं पिंजरा तोड़ उड़ूँगा।
उड़ना तो है फ़ितरत मेरी,
पिंजरे में बंध के न रहूँगा।
... मैं पंछी नटनागर का हूँ...
सदा रहा हूँ, सदा रहूँगा...

– दास कुम्भेश

साईं भक्तों के लिए ११ मार्च २०२६ का दिन अत्यंत दु:खद रहा, जब देहरादून के निवासी परम साईं भक्त प्रो. डॉ. सुबोध अग्रवाल जी इस नश्वर संसार को छोड़ कर सद्गुरु श्री साईं बाबा के श्री–चरणों में सदैव के लिए विश्राम को प्राप्त हो गए। उनके देहावसान का समाचार सुन कर साईं भक्त समुदाय में गहरी शोक की लहर दौड़ गई। उनका जाना केवल उनके परिवार या परिचितों के लिए ही नहीं, बल्कि समस्त साईं भक्तों के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

प्रो. डॉ. सुबोध अग्रवाल जी केवल एक विद्वान शिक्षाविद ही नहीं थे, बल्कि वे सच्चे अर्थों में साईं बाबा के अनन्य भक्त, आध्यात्मिक चिंतक और साईं संदेश के समर्पित प्रचारक थे। उनका संपूर्ण जीवन साईं बाबा की शिक्षाओं, उनकी दिव्य लीलाओं और उनके सार्वभौमिक संदेश के प्रचार–प्रसार के लिए समर्पित रहा। वे यह दृढ़ता से मानते थे कि साईं बाबा का संदेश संपूर्ण मानवता के लिए है, जिसमें प्रेम, करुणा, सेवा और सद्भाव का मार्ग निहित है।

प्रो. डॉ. सुबोध अग्रवाल जी अपनी विद्वत्ता, सादगी और आध्यात्मिक गहराई के कारण साईं भक्तों के बीच अत्यंत सम्मानित थे। उनके व्यक्तित्व में ज्ञान,

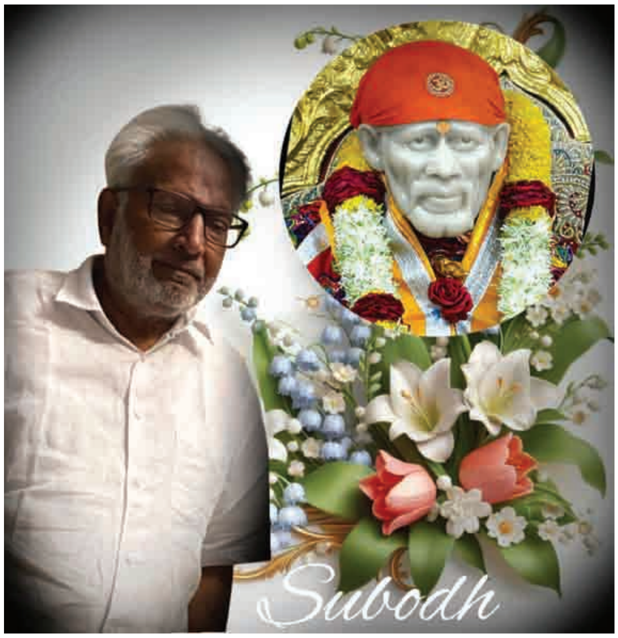

विनम्रता और आध्यात्मिकता का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता था। वे सदैव लोगों को यह प्रेरणा देते थे कि सच्ची भक्ति केवल पूजा–पाठ या अनुष्ठानों तक सीमित नहीं होती, बल्कि वह सेवा, त्याग और मानव कल्याण के कार्यों के माध्यम से साकार होती है।

श्री साईं बाबा के प्रति उनकी श्रद्धा अत्यंत गहरी और अटूट थी। उन्होंने अपने जीवन में बाबा के दो महान सिद्धांत – 'श्रद्धा' और 'सबूरी' – को न केवल स्वीकार किया, बल्कि अपने आचरण और जीवन दर्शन का आधार बनाया। यही कारण था कि उनके संपर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति उनके शांत, सकारात्मक और आध्यात्मिक व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता था।

प्रो. डॉ. सुबोध अग्रवाल जी की आध्यात्मिक साधना का सबसे प्रभावशाली माध्यम उनका लेखन कार्य था। उनकी लेखनी में आध्यात्मिक अनुभूति, गहन अध्ययन और श्री साईं बाबा के प्रति अगाध श्रद्धा का अद्भुत संगम दिखाई देता था। उनके आध्यात्मिक लेख श्री साईं बाबा संस्थान ट्रस्ट, शिर्डी की एकमात्र प्रामाणिक एवं आधिकारिक पत्रिका 'श्री साईं लीला' में निरंतर प्रकाशित होते रहे। इस पत्रिका के माध्यम से उनके विचार देश–विदेश के अनगिनत साईं भक्तों तक पहुँचे और अनेक लोगों को आध्यात्मिक प्रेरणा तथा मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

उनके लेखों की विशेषता यह थी कि वे श्री साईं बाबा की लीलाओं का वर्णन केवल कथा के रूप में ही

नहीं करते थे, बल्कि उनमें जीवन के गहरे आध्यात्मिक संदेशों को भी सरल और सहज भाषा में प्रस्तुत करते थे। वे यह समझाने का प्रयास करते थे कि श्री साईं बाबा की शिक्षाएँ आज के समय में भी उतनी ही प्रासंगिक और मार्गदर्शक हैं जितनी उनके अवतारकाल में थीं।

प्रो. डॉ. सुबोध अग्रवाल जी का जीवन इस बात का जीवंत उदाहरण था कि जब कोई व्यक्ति पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ईश्वर की भक्ति में स्वयं को समर्पित कर देता है, तो उसका जीवन स्वयं एक प्रेरणा बन जाता है। उन्होंने श्री साईं बाबा के प्रति अपनी आस्था को केवल व्यक्तिगत साधना तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे समाज में आध्यात्मिक जागरण और सकारात्मक विचारों के प्रसार का माध्यम बनाया।

११ मार्च २०२६ को उनका लौकिक संसार से प्रस्थान निश्चित रूप से साईं भक्त समुदाय के लिए एक गहरी क्षति है। किंतु यह भी उतना ही सत्य है कि उनका जीवन, उनके विचार और उनकी आध्यात्मिक लेखनी सदा-सदा के लिए साईं भक्तों के हृदय मे जीवित रहेगी और आने वाली पीढ़ियों को भी प्रेरणा देती रहेगी।

श्री साईंनाथ महाराज से प्रार्थना है कि वे पुण्यात्मा प्रो. डॉ. सुबोध अग्रवाल जी को अपने श्री-चरणों में स्थान प्रदान करें तथा उनके परिवारजनों और समस्त साईं भक्तों को इस अपार दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

साईं के अनन्य भक्त प्रो. डॉ. सुबोध अग्रवाल जी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि एवं शत-शत नमन!

ॐ श्री साईंनाथाय नम:।

- सुरेश चन्द्रा

प्रो. डॉ. सुबोध अग्रवाल सर श्री साईं बाबा के सच्चे भक्त थे। उनसे एक-दो बार बात हुई, तब यह जाना कि बाबा के कृपा पात्र भक्त बन जाने पर जीवन में प्रशांति कैसे उतरती है। सुबोध सर संसार में रहे तब तक बाबा की भक्ति में लीन रहे और अब नश्वर देह का त्याग कर उनके चरणों में विलीन हो गए हैं। बाबा ने उन्हें अपनी गोद में ले लिया है, जिसे हम सद्गति कहते हैं।

ॐ साईं, श्री साईं, जय जय साईं...

- डॉ. ओमप्रकाश टाक
३५ बी, पोलो, द्वितीय पावटा, जोधपुर, राजस्थान.
ई-मेल : **op.tak.jdr@gmail.com** संचार ध्वनि : (0)९८२९०२७०१०

लगभग ९५ वर्ष के वयोवृद्ध भक्त, जिनका नाम गौली बुवा था, पंढरी के एक वारकरी थे। वे ८ मास पंढरपुर तथा ४ मास (आषाढ़ से कार्तिक तक) गंगातट पर निवास करते थे। सामान ढोने के लिए वे एक गधे को अपने पास रखते और एक शिष्य भी सदैव उनके साथ रहता था। वे प्रतिवर्ष वारी लेकर पंढरपुर जाते और लौटते समय श्री साईं बाबा के दर्शनार्थ शिर्डी आते थे। बाबा पर उनका अगाध प्रेम था। वे बाबा की ओर एकटक निहारते और कह उठते थे कि ये तो मूर्तिमंत पंढरीनाथ, अनाथों के नाथ हैं। गौली बुवा विठोबा के परम भक्त थे। उन्होंने अनेक बार पंढरी की यात्रा की थी तथा प्रत्यक्ष अनुभव किया कि श्री साईं बाबा सचमुच में ही पंढरीनाथ हैं।

- श्री साईं सत् चरित अध्याय ४ -

विठ्ठलपूजन में बाबा को कितनी रुचि थी, यह भगवंतराव क्षीरसागर की कथा से स्पष्ट है। भगवंतराव के पिता विठोबा के परम भक्त थे, जो प्रतिवर्ष पंढरपुर वारी लेकर जाते थे। उनके घर में विठोबा की एक मूर्ति थी, जिसकी वे नित्यप्रति पूजा करते थे। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र भगवंतराव ने वारी, पूजन, श्राद्ध इत्यादि समस्त कर्म करना छोड़ दिया। जब भगवंतराव शिर्डी आए तो बाबा उन्हें देखते ही कहने लगे कि ''इसके पिता मेरे परम मित्र थे। इसी कारण मैंने इसे यहाँ बुलाया है। इसने कभी नैवेद्य अर्पण नहीं किया तथा मुझे और विठोबा को भूखों मारा है। इसलिए मैंने इसे यहाँ आने को प्रेरित किया है। अब मैं इसे हठपूर्वक पूजा में लगा दूँगा।''

- श्री साईं सत् चरित अध्याय ४ -

... और शुरू हो गई साईं की विधिवत पूजा!

एक बार तात्यासाहेब नूलकर के मित्र डॉक्टर पंडित बाबा के दर्शनार्थ शिर्डी पधारे। बाबा को प्रणाम कर वे मस्जिद में कुछ देर तक बैठे। बाबा ने उन्हें दादा भट के पास भेजा, जहाँ उनका अच्छा स्वागत हुआ। फिर दादा भट और डॉ. पंडित एक साथ पूजन के लिए मस्जिद पहुँचे। दादा भट ने बाबा का पूजन किया। बाबा का पूजन तो प्राय: सभी किया करते थे, परंतु अभी तक उनके शुभ मस्तक पर चंदन लगाने का किसी ने भी साहस नहीं किया था। केवल एक म्हालसापति ही उनके गले में चंदन लगाया करते थे। डॉ. पंडित ने पूजन की थाली में से चंदन लेकर बाबा के मस्तक पर त्रिपुंड्राकार लगाया। लोगों ने महान् आश्चर्य से देखा कि बाबा ने एक शब्द भी नहीं कहा। संध्या समय दादा भट ने बाबा से पूछा, ''क्या कारण है कि आप दूसरों को तो मस्तक पर चंदन नहीं लगाने देते, परंतु डॉ. पंडित को आपने कुछ भी नहीं कहा?'' बाबा कहने लगे, ''डॉ. पंडित ने मुझे अपने गुरु के समान ही समझा और अपने गुरु की तरह मेरी पूजा की।'' डॉ. पंडित के गुरु धोपेश्वर के रघुनाथ 'काका पुराणिक' नाम से प्रसिद्ध थे। पूछने पर डॉ. पंडित ने दादा भट से कहा, ''मैंने बाबा को अपने गुरु काका पुराणिक के समान जान कर ही उन्हें त्रिपुंड्राकार चंदन लगाया, जिस प्रकार मैं अपने गुरु को सदैव लगाया करता हूँ।''

यद्यपि बाबा भक्तों को उनकी इच्छानुसार ही पूजन करने देते थे, परंतु कभी-कभी तो उनका व्यवहार विचित्र ही हो जाया करता था। जब कभी वे पूजन की थाली फेंक कर रुद्रावतार धारण कर लेते, तब उनके समीप जाने का साहस किसी को न हो सकता था। कभी वे भक्तों को झिड़कते और कभी मोम से भी नरम होकर शांति तथा क्षमा की मूर्ति से प्रतीत होते थे। कभी-कभी वे क्रोधावस्था में कंपायमान हो जाते और उनके लाल नेत्र चारों ओर घूमने लगते थे; तथापि उनके अंत:करण में प्रेम और मातृ-स्नेह का स्रोत बहा ही करता था। भक्तों को बुला कर वे कहा करते थे कि उन्हें तो कुछ ज्ञात ही नहीं है कि वे कब उन पर क्रोधित हुए। यदि यह संभव हो कि समुद्र नदियों को लौटा दे तो वे भक्तों के कल्याण की भी उपेक्षा कर सकते हैं। वे तो भक्तों के समीप ही रहते हैं और जब भक्त उन्हें

म्हालसापति

तात्यासाहेब नूलकर

पुकारते हैं तो वे तुरंत ही उपस्थित हो जाते हैं। वे तो सदा भक्तों के प्रेम के भूखे हैं।

... यथार्थ में बाबा ने कभी किसी से पैसा नहीं माँगा और न ही अपने भक्तों को ही माँगने दिया। वे आध्यात्मिक उन्नति में कंचन को बाधक समझते थे और भक्तों को उसके पाश से सदैव बचाते रहते थे। भगत म्हालसापति इसके उदाहरण स्वरूप हैं। वे बहुत निर्धन थे और बड़ी कठिनाई से ही अपना जीवन बिताते थे। बाबा उन्हें कभी पैसा माँगने नहीं देते थे और न ही वे अपने पास की दक्षिणा में से उन्हें कुछ देते थे। एक बार एक दयालु और सहृदय व्यापारी हंसराज ने बाबा की उपस्थिति में ही एक बड़ी रक़म म्हालसापति को दी; परंतु उन्होंने उसे अस्वीकार किया।...

– श्री साईं सत् चरित अध्याय ३६

महानिर्वाण के ३२ वर्ष पूर्व बाबा ने अपनी जीवन–रेखा पार करने का एक प्रयास किया था। १८८६ में मार्गशीर्ष पूर्णिमा के दिन बाबा को दमा से अधिक पीड़ा होने लगी। इस व्याधि से छुटकारा पाने के लिए उन्होंने अपने प्राण ब्रह्मांड में चढ़ा कर समाधि लगाने का विचार किया। अतएव उन्होंने भगत म्हालसापति से कहा, ''तुम मेरे शरीर की तीन दिन तक रक्षा करना और यदि मैं वापस लौट आया तो ठीक है, नहीं तो उस स्थान (एक स्थान को इंगित करते हुए) पर मेरी समाधि बना देना और दो ध्वजाएँ चिह्न स्वरूप फहरा देना।'' ऐसा कह कर बाबा रात में लगभग दस बजे पृथ्वी पर लेट गए। उनका श्वासोच्छ्वास बंद हो गया और ऐसा दिखाई देने लगा कि जैसे उनके शरीर में प्राण ही न हों। सभी लोग, जिनमें ग्रामवासी भी थे, वहाँ एकत्रित हुए और शरीर परीक्षण के पश्चात् शरीर को उनके द्वारा बताए हुए स्थान पर समाधिस्थ कर देने का निश्चय करने लगे। परंतु, भगत म्हालसापति ने उन्हें ऐसा करने से रोका और उनके शरीर को अपनी गोद में रख कर वे तीन दिन तक उसकी रक्षा करते रहे। तीन दिन व्यतीत होने पर रात को लगभग तीन बजे प्राण लौटने के चिह्न दिखलाई पड़ने लगे। श्वासोच्छ्वास पुनः चालू हो गया और उनके अंग–प्रत्यंग हिलने–डुलने लगे। उन्होंने नेत्र

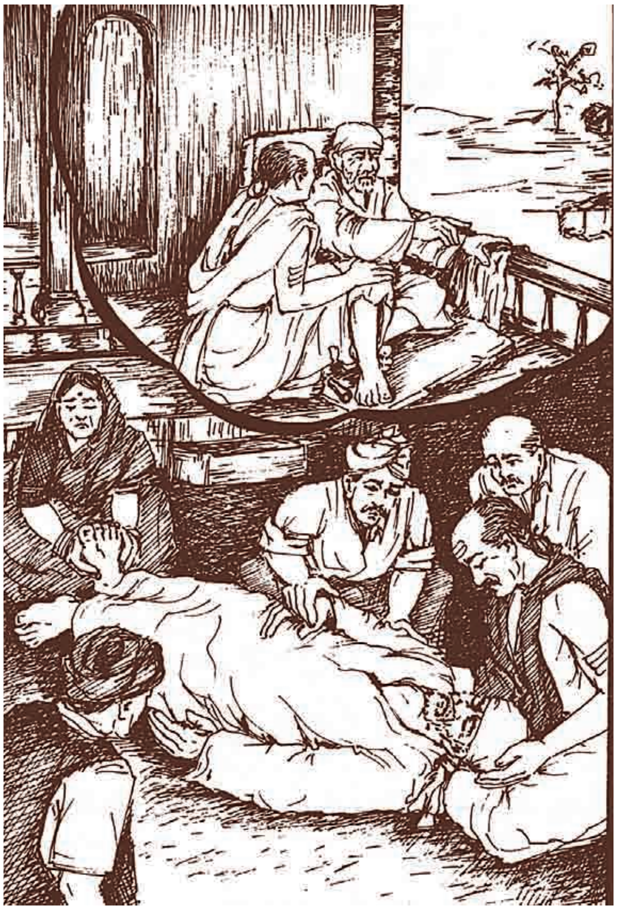

खोल दिए और करवट लेते हुए पुनः चेतना में आ गए।... – **श्री साईं सत् चरित** **अध्याय ४४**

... स्वर्गीय गोविंद रघुनाथ दाभोलकर उर्फ हेमाडपंत द्वारा मूल मराठी में लिखित **श्री साईसच्चरित** में तात्यासाहेब नूलकर का ज़िक्र बहुत ही कम है; केवल **अध्याय ३१** में इतना ही लिखा है कि उनका देहांत शिर्डी में हुआ। 'श्री साईलीला' (मराठी) पत्रिका में संक्षिप्त विवरण प्रकाशित हुआ था।... जिस समय तात्यासाहेब पंढरपुर में उपन्यायाधीश थे, उसी समय नानासाहेब चाँदोरकर भी वहाँ के मामलतदार थे। ये दोनों आपस में बहुधा मिला करते और प्रेमपूर्वक वार्तालाप किया करते थे। तात्यासाहेब संतों में अविश्वास करते थे, जबकि नानासाहेब की संतों के प्रति विशेष श्रद्धा थी। नानासाहेब ने तात्यासाहेब को साईं बाबा की लीलाएँ सुनाई और एक बार शिर्डी जाकर बाबा का दर्शन–लाभ उठाने का आग्रह भी किया। तात्यासाहेब दो शर्तों पर चलने को तैयार हुए :–

(१) उन्हें ब्राह्मण रसोईया मिलना चाहिए। (२) भेंट के लिए नागपुर से उत्तम संतरे होने चाहिए। शीघ्र ही ये दोनों शर्तें पूर्ण हो गईं। इसलिए अब तात्यासाहेब को शिर्डी जाना ही पड़ा। पहले तो बाबा उन पर क्रोधित हुए, परंतु जब धीरे–धीरे तात्यासाहेब को विश्वास हो गया कि बाबा सचमुच ही ईश्वरावतार हैं, तो वे बाबा से प्रभावित हो गए और फिर जीवनपर्यंत वहीं रहे। जब उनका अंतकाल समीप आया, तो उन्हें बाबा का पादतीर्थ दिया गया। उनकी मृत्यु का समाचार सुन कर बाबा बोले, ''अरे! तात्या तो आगे चला गया। अब उसका पुनः जन्म नहीं होगा।''...

ऐसे महान थे ये दो साईं समर्पित भक्त – भगत म्हालसापति और तात्यासाहेब नूलकर...

❍❍❍

साईं कहने लगे ''यह मेरे गुरु का स्थान। बहुत पवित्र यह मेरा वतन। जैसा है वैसा ही जतन करो! मानो मेरा यह इतना वचन।''... म्हालसापति आदि जन। पुराने शिर्डी के ग्रामस्थ जन। मान कर बाबा के गुरु का यह समाधि स्थान। करने लगे यहाँ वंदन।...

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

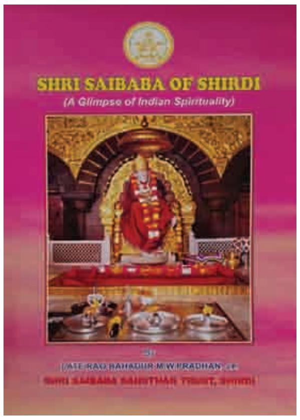

At first Sai Baba never allowed anybody to perform even His *Pooja* (worship). The first *Pooja* was allowed to be done by Mhalsapati. Then after sometime Sitaram Dengle of Nimgaon came to perform *Pooja*, but although Sai Baba got angry, he was allowed to finish it. Later on the younger son, Mahadev alias Bapu, of Nanasaheb Chandorkar was complacently allowed to perform *Pooja* and later on all were allowed to do it; but at that time Sai Baba would not allow anybody to perform *Arati*. After sometime, the privilege of first performing the *Arati* was reserved for the late Laxman Krishnaji alias Tatysaheb Noolkar. He was a sub-judge at Pandharpur, and as he was ill, he had taken leave and come to Shirdi; but his innermost desire was to retire from the service and spend the rest of his life at the Feet of Shree, and that was what happened, Noolkar being very devoutly attached to Sai Baba.

SHRI SAIBABA OF SHIRDI
(A Glimpse of Indian Spirituality)

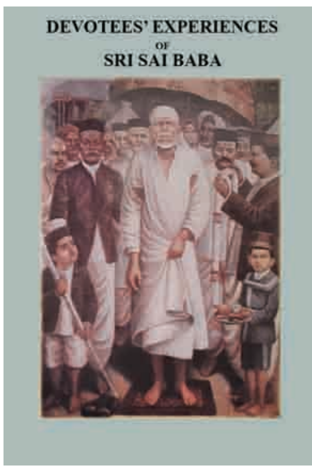

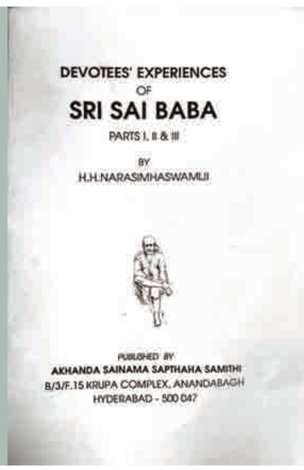

"I was taken as a little boy to Sai Baba by my father. Mhalsapati worshipped Baba applying *gandha* i.e. sandal paste to Feet, head etc. None applied sandal to Baba's forehead. I was the first, who, as a child of 4, innocently applied it to His forehead just as we apply it to all the Gods we worship. After that time, others were allowed to do so."

- Bapurao Nanasaheb Chandorkar,
S/o Nanasaheb Chandorkar

– – –

"I went and resided at Shirdi for sometime. Baba's *Arati* and *Pooja* on ordinary days were started, but for some time there was no celebration of *Guru Paurnima* by special worship of Baba on that day. Baba Himself sent for my father-in-law and said, 'Do you know that this is *Guru Paurnima*? Bring your worship material and do your *Guru Pooja*.' Then we had *Guru Pooja* on that day and this practice of celebrating *Guru Paurnima* by all the devotees worshipping Baba then begun, has continued up to date."

- Rao Bahadur Hari Vinayak Sathe

– – –

"My husband died of plague at Pune, and there was no help for me. My mother arrived in time to see him alive. I had just then conceived. When I was in advanced pregnancy with serious difficulty at Jamner, was the *Gosavi* incident and Baba's *Udi*. But, I knew nothing of it then, in my pain. When we were at Pandharpur, my brother Bapurao, as a little child of 4, went daily in the morning, placed a flower on Sai Baba's head and worshipped Him. That was the beginning of the regular worship of Baba, as others were not pemitted till then to do what Bapu did. Before that there was no regular system of daily worship of Baba."

- Mainatai
D/o Nanasaheb Chandorkar

❍❍❍

The annual *Shree Guru Paurnima* festival was celebrated this year from Tuesday, July 28, 2026 to Thursday, July 30, 2026 by the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi.

The *Guru-shishya* tradition is very ancient. *Ashadhi Paurnima* is celebrated as *Guru Paurnima* to express gratitude towards our *Guru*. This *Guru Paurnima* (full moon) is also recognised as Vyas *Pooja*. *Guru Paurnima* has been celebrated in Shirdi since the incarnation-period of Shree Sai Baba. So, this day has an extra-ordinary significance for Sai devotees. Several devout-devotees who have faith in Shree Sai Baba, coming to Shirdi every year on *Guru Paurnima* to avail the *darshan* of the *Samadhi*, and *padayatris* (pilgrims on foot) with hundreds of *palkhis* (palanquins) from all over Maharashtra and other states attend the festival. This year's *Shree Guru Paurnima* festival was celebrated in an auspicious atmosphere in the presence of lakhs of devout-devotees. Shirdi resounded with the chanting of Sai's name by Sai devotees in palanquin processions from various parts of the country.

In order to facilitate the convenient accommodation and *darshan* of the devotees who came from the nook and corner of the country for the *Shree Guru Paurnima* festival, monsoon pavilions were erected by the Sansthan in the temple area, as also in all accomodation locations. Additional buses were arranged to go to and from the temple and accommodation places and Shree Sai Prasadalaya. First aid centers were started at Dixit *Wada* in front of the *Gurusthan*, new *darshan* line, Shanti Nivas Bldg. *darshan*

line, Shree Sai Baba *Samadhi Mandir Shatabdi Mandap* beside the Maruti *Mandir*, Shree Sai Ashram (1000 rooms) and Shree Sai Prasadalaya. Ambulances were also deployed at these places for emergency medical services. Along with this, after the *palkhis* reached Shirdi, the foot-pilgrims were accommodated at Sai Dharmashala at a nominal rate. *Ladoo* selling centers were set up, to make *ladoo-prasad* packets easily available to the devotees at various places during the festival.

Security personnel, police officers and employees, Rapid Action Force squad, bomb detection squad of the Sansthan's security department were deployed to maintain proper security in the temple premises and Shirdi premises. Along with this, Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi, Police Administration and Shirdi Nagar Panchayat's joint anti-encroachment and agent-preventive squads were also kept in readiness.

On the first day of the festival, Tuesday, July 28, 2026, at 5.15 a.m., Shree Sai Baba's *Kakad Aarti* took place. After that, a grand procession of the Image of Shree Sai Baba, Shree Sai Sat Charita *Pothi* (holy book) and the *Veena* was taken out from the *Samadhi Mandir* to Dwarkamai via *Gurusthan*, with the sounding of cymbal, *mrudang* and other musical instruments. In this procession, the Sansthan's Chief Executive Officer Shri Goraksha Gadilkar, carrying the holy book, Deputy Chief Executive Officer Shri Bheemraj Darade, carrying the *Veena* and I/c. Deputy Executive Engineer Shri Sanjay Jori and I/c. Head of the CCTV dept. Shri Rahul Galande carrying the Image of Shree Sai Baba participated. The Sansthan's Administrative Officer Shri Sandeepkumar Bhosale, Shri Vishnu Thorat, Head of the Temple dept., Shri Deepak Lokhande, I/c. Public Relations Officer, temple priests, Shirdi villagers and Sai devotees were present in large numbers on the occasion. After the procession arrived at Dwarkamai, the non-stop reading of the holy book, Shree Sai Sat Charita commenced with Shri Goraksha Gadilkar, Chief Executive Officer of the Sansthan, reading the first chapter, Shri Bheemraj Darade, Deputy Chief Executive Officer, the second chapter, Smt. Mangala Varade, Chief Accounts Officer, the third chapter, Shri Sandeepkumar Bhosale, Administrative Officer, the fourth chapter and Prof. Abhaykumar Dunakhe, the fifth chapter.

Shri Goraksha Gadilkar, Chief Executive Officer of the Sansthan with his wife Sou. Vandana Gadilkar, performed the *Padya Pooja* (Worship of the Holy Feet) of Shree Sai Baba.

At 12.30 p.m., Shree Sai Baba's Mid-

First day of the *Guru Paurnima Utsav*, Tuesday, July 28, 2026

day *Aarti* was done. From 1 p.m. to 3 p.m., Shri Rajesh Arora (Barabanki)'s 'Sai Bhajan' programme was held. From 4 p.m. to 6 p.m., *Hari Bhakta Parayan*, Smt. Vedashree Vaibhav Oak (Dombivli East, Tal. Kalyan, Dist. Thane, Maharashtra State)'s *kirtan* programme was held on the stage of Shree Sai Baba *Samadhi Shatabdi* (Centenary) *Mandap* beside the Hanuman temple. *Dhoop Aarti* of Shree Sai Baba was held at 7 p.m. From 7.30 p.m. to 9.30 p.m., Saxena Brothers (Delhi)'s 'Sai Bhajan' programme was held.

At 9.15 p.m., the procession of Shree Sai Baba's *Palkhi* was taken out through the village. After the return of the *Palkhi* procession, at 10 p.m., Shree Sai Baba's *Shej Aarti* was performed. Dwarkamai was kept open for the *Akhand Parayan* (continuous reading).

On the main day of the festival, Wednesday, July 29, 2026, at 5.15 a.m., Shree Sai Baba's *Kakad Aarti* took place. After that, at 5.45 a.m., the non-stop reading of the holy book, Shree Sai Sat Charita concluded. After that, a grand procession of the sacred book, Shree Sai Sat Charita was taken out. In this procession, Shri Shivaji Kachare, Chairman of the Sansthan's Ad-hoc Committee and Principal District and Sessions Judge with the *Vina*, Shri Goraksha Gadilkar, Chief Executive Officer of the Sansthan with the holy book and Shri Bheemraj Darade, Deputy Chief Executive Officer and Shri Kunal Abhale, Purchase Manager with the Image of Shree Sai Baba participated. Shri Sandeepkumar Bhosale, Administrative Officer, Shri Vishnu Thorat, Head of the Temple dept., Shri Rohidas Mali,

Security Officer, Shri Deepak Lokhande, I/c. Public Relations Officer, temple priests, Shirdi villagers and Sai devotees were present in large numbers on this occasion.

At 6.20 a.m., the holy bath of Shree Sai Baba was done. On the occasion of Shri *Guru Paurnima* festival at 7 a.m., the *Padya Pooja* of Shree Sai Baba was performed by Shri Shivaji Kachare, Chairman of the Sansthan's Ad-hoc Committee and Principal District and Sessions Judge and his wife Sou. Padmini Kachare. At 8 a.m., worship of the *Shatabdi* Flag in Lendi Baug was done.

At 12.30 p.m., Mid-day *Aarti* of Shree Sai Baba was done. From 1 p.m. to 3 p.m., Singer, Musician and Music Director Dr. Monika Sai (Lucknow)'s 'Sai Bhajan' programme was performed.

From 4 p.m. to 6 p.m., *Hari Bhakta Parayan,* Smt. Vedashree Vaibhav Oak's *kirtan* programme was held. *Dhoop Aarti* of Shree Sai Baba was done at 7 p.m.

From 7.30 p.m. to 10 p.m., a programme of 'Sai Bhajan Sandhya' by the famous Singer, Musician Shri Shailendra Bharati (Mumbai) was held on the stage of Shree Sai Baba *Samadhi Shatabdi* (Centenary)

Mandap beside the Hanuman temple. A grand procession of Shree's Chariot was taken out through the village at 9.15 p.m. From 10 p.m. to 6 a.m. the next day, there was a performance of the artists on the stage in front of the *Samadhi Mandir*. Being the main day of the festival, the *Samadhi Mandir* of Shree Sai Baba was kept open for the *darshan* throughout the night. Lakhs of devotees availed the benefit of this.

On the concluding day of the festival, Thursday, July 30, 2026 at 6 a.m., the holy bath of Shree Sai Baba was done. At 6.50 p.m., Shri Bheemraj Darade, Deputy Chief Executive Officer of the Sansthan and his wife Sou. Vaishali Darade performed the *Padya Pooja* of Shree Sai Baba in the *Samadhi Mandir*. Shri Goraksha Gadilkar, Chief Executive Officer of the Sansthan, Shri Vishnu Thorat, Head of the Temple dept.

Main day of the *Guru Paurnima Utsav*, Wednesday, July 29, 2026

were present on this occasion. After that, the *Rudrabhishek* was performed by Shri Goraksha Gadilkar, Chief Executive Officer of the Sansthan and his wife Sou. Vandana Gadilkar at the *Gurusthan* at 7 a.m. Shri Bheemraj Darade, Deputy Chief Executive Officer of the Sansthan, Shri Vishnu Thorat, Head of the Temple dept. were present on this occasion.

From 10 a.m. to 12 noon, *Hari Bhakta Parayan,* Smt. Vedashree Vaibhav Oak performed the *kala keertan* programme. After the *kirtan*, the *Dahi-handi* (pot of curd) was broken by Shri Hruturaj Nilesh Kote, a descendant family member of the contemporary devotee of Shree Sai Baba, Shri Tatya Patil Kote. Shri Goraksha Gadilkar, Chief Executive Officer of the Sansthan, Shri Vishnu Thorat, Head of the Temple dept., Shri Deepak Lokhande, I/c. Public Relations Officer, temple priests, Shirdi villagers and Sai devotees were present in large numbers

Concluding day of the *Guru Paurnima Utsav*, Thursday, July 30, 2026

on this occasion.

At 12.10 p.m., Mid-day *Aarti* of Shree Sai Baba was done. From 1 p.m. to 3 p.m., Shri Neeraj Sharma (T Series, New Delhi)'s 'Sai Bhajan' programme was held. From 4 p.m. to 6 p.m., a programme of 'Sain kee Leela' by Shri Raj Acharya (Kolkata) was held. *Dhoop Aarti* was done at 7 p.m.

From 7.30 p.m. to 9.30 p.m., Shri Vijay Sakharkar (Borivli East, Mumbai)'s 'Saisvar Nrutyotsav' programme was held. At 9.15 p.m., Thursday's regular procession of Shree Sai Baba's *Palkhi* was taken out. The *Shej Aarti* of Shree Sai Baba was done at 10 p.m.

Like every year, with the exception of the corona period, the *padayatri* devout of Shree Sai Baba Palkhi Sohla Samiti who had come from Pune, attended the festival. On the occasion of the festival, the attractive floral decoration of the temple and its surroundings from the donation by Shri S. Prakash (Bengaluru, Karnataka), philanthropic Sai devotee and the spectacular electric lighting of the temple and its surroundings by Sairaj Decorators (Mumbai) drew the attention of Sai devotees.

All the Administrative Officers, departmental Head and employees under the guidance of Shri Vijay Kachare, Chairman of the Sansthan's Ad-hoc Committee and Principal District and Sessions Judge, Dr. Pankaj Ashiya, Member of the Sansthan's Ad-hoc Committee and District Collector, Shri Goraksha Gadilkar, Chief Executive Officer of the Sansthan and Shri Bheemraj Darade, Deputy Chief Executive Officer took special efforts for the successful conduct of the festival.

RNI Regd. No.
MAH/BIL/2000/8048

SHRI SAI LEELA

Date : August 15, 2026

श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी के लिए मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा टैको बिजन्स प्रा. लि., गाला क्र. ९ और १०, ब्लू माऊंट वर्क स्टेशन, वालीव फाटा, सातीवली रोड़, वसई पूर्व, पालघर – ४०१ २०८ में मुद्रित और साईं निकेतन, ८०४ बी, डॉ. आंबेडकर रोड़, दादर, मुंबई – ४०० ०१४ में प्रकाशित।
* संपादक : मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी